हम यीशु में विश्वास करते हैं

अध्याय 1

मुक्तिदाता

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
अनंतता 1
ईश्वरत्व **2**
स्पष्ट कथन 2
पुराना नियम 3
ईश्वरीय गुण 3
त्रिएकता **4**
सात्विकता 5
आर्थिक 5
सम्मति **6**
सृष्टि 9
सृष्टि का सप्ताह **9**
मनुष्य का पाप में पतन **13**
व्यक्तिगत परिणाम 13
सार्वभौमिक परिणाम 18
मनुष्यजाति के लिए आशा 20
छुटकारा 21
उद्देश्य **21**
त्रिएकता 22
सृष्टि 23
विश्वासी 23
प्रतिज्ञाएँ **24**
कार्य **27**
परमेश्वर के राज्य का उदघाटन 27
आज्ञाकारिता 28
पुनरुत्थान 29
स्वर्गारोहण 30
पूर्णता 31
यीशु का पुनरागमन **31**
घटनाएँ **32**
सामान्य पुनरुत्थान 32
अंतिम न्याय 33

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सृष्टि का नवीनीकरण..... 34
परिणाम 36
परमेश्वर की महिमा..... 36
छुटकारे का आनंद 39
उपसंहार..... 40

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम यीशु में विश्वास करते हैं

अध्याय एक

मुक्तिदाता

परिचय

एक छोटे लड़के के बारे में एक पुरानी कहानी है, जिसने एक खिलौने वाली नाव बनाई। उसने इसके आवरण को सावधानी से रंगा और इसके छोटे-छोटे पाल बनाए। जब नाव तैयार हो गई, तो उसने इसे पानी की एक धारा में चलाया। कुछ समय तक तो यह आसानी से चलती रही, परंतु फिर धारा के प्रवाह से बह गई। उस लड़के ने अपनी खोई हुई नाव को खोजा, परंतु वह उसे नहीं मिली। कुछ समय के बाद वह तब आश्चर्यचकित रह गया, जब उसने इसे एक दुकान की अलमारी में रखा हुआ देखा। वह दौड़ता हुआ भीतर गया और कहा, "मेरी नाव अलमारी में रखी हुई है!" दुकानदार ने उत्तर दिया, "क्षमा करना बेटा, परंतु तुम्हें इसके लिए पैसे देने होंगे।" उस लड़के ने कई सप्ताह तक कार्य करके इतने पैसे बचाए कि वह अपनी नाव को वापस खरीद सके। जब वह अपने हाथों में नाव लेकर दुकान से निकला तो उसने उससे कहा, "हे छोटी नाव, अब तुम फिर से मेरी हो गई हो। मैंने तुम्हें बनाया, मैंने तुम्हें खोजा, और मैंने तुम्हें पुन: खरीद लिया।"

कई रूपों में, यीशु और उसके उसके लोगों के बीच का संबंध उस छोटे लड़के और उसकी नाव के बीच के संबंध जैसा ही है। परमेश्वर के पुत्र ने हमारी सृष्टि की, परंतु हम पाप में गिर गए और खो गए। परंतु वह हमें कभी नहीं भूला। वह इस पृथ्वी पर उसे खोजने और बचाने आया जो खो गया था। और जब उसने हमें पा लिया, तो उसने हमें छुड़ाने के लिए बड़ा मूल्य अदा किया - उसकी अपनी मृत्यु का मूल्य।

यह हम यीशु पर विश्वास करते हैं श्रृंखला का पहला अध्याय है। इस श्रृंखला में हम धर्मविज्ञान के उस क्षेत्र की खोज करेंगे जो मसीहविज्ञान के नाम से जाना जाता है, अर्थात् मसीह की धर्मशिक्षा। इन सभी अध्यायों में हम यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य से संबंधित ऐसे विभिन्न सत्यों की जाँच करेंगे जिसकी उसके अनुयायियों ने हजारों वर्षों से पुष्टि की है। हमने इस पहले अध्याय का शीर्षक "मुक्तिदाता" दिया है क्योंकि हम इस बात पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि कैसे यीशु पापियों को पापों से मुक्ति देता है, और हमारे आनंद और अपने पिता की महिमा के लिए सृष्टि की संपूर्ण पुनर्स्थापना को सुनिश्चित करता है।

यीशु मुक्तिदाता है के इस अध्याय में हम चार भिन्न समयों के दौरान परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य की खोज करेंगे। पहला, हम इस संसार की सृष्टि से पहले अनंतता में उसके अस्तित्व और उसकी योजना पर ध्यान देंगे। दूसरा, हम सृष्टि की आरंभिक अवस्था के दौरान उसकी गतिविधियों का सर्वेक्षण करेंगे। तीसरा, हम छुटकारे के युग के बारे में बात करेंगे जो मनुष्यजाति के पाप में पतन के बाद आरंभ हुआ और वर्तमान युग तक चल रहा है। और चौथा, हम इतिहास की पूर्णता को खोजेंगे जो उस समय होगी जब उसका पुनरागमन होगा। आइए अनंतता के साथ आरंभ करें।

अनंतता

अधिकतर जब मसीही यीशु के बारे में सोचते और बात करते हैं तो उसके पृथ्वी पर जीवन जीने पर और उस कार्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो वह अभी स्वर्ग में कर रहा है। कई बार हम इस विषय पर भी बाइबल की शिक्षाओं पर ध्यान देते है कि जब यीशु का पुनरागमन होगा तो वह भविष्य में क्या करेगा। और ये सब अत्यंत महत्वपूर्ण शिक्षाएँ हैं। परंतु सच्चाई यह है कि त्रिएकता का दूसरा व्यक्तित्व, जिसे हम यीशु मसीह के नाम से जानते हैं, हमारा अनंत परमेश्वर है। इसलिए जब हम धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण से

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसके बारे में सोचते हैं, तो ऐसा करना अक्सर सहायक होता है कि हम इतिहास में बहुत पीछे से आरंभ करें और देखें कि वह पूरे इतिहास के दौरान हमारे छुटकारे के लिए योजना बना रहा है और उस पर कार्य कर रहा है - यहाँ तक कि इतिहास के आरंभ होने से भी पहले।

धर्मविज्ञानी ब्रह्मांड की सृष्टि से पहले की अनंतता की प्रकृति के बारे में एक दूसरे से पूरी तरह सहमत नहीं हैं। कुछ तो यहाँ तक सुझाव देते हैं कि समय स्वयं सृष्टि का एक पहलू है, इसलिए परमेश्वर के सृष्टि के पहले के समय के बारे में बात करना असंभव है। इसलिए इस अध्याय में हम ब्रह्मांड की सृष्टि से पहले परमेश्वर के अस्तित्व के रूप में अनंतकाल को पहचानेंगे। अनंतता में केवल परमेश्वर का अस्तित्व था। और उसका अस्तित्व पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में त्रिएकता में था।

अनंतता के बारे में हमारा विचार-विमर्श तीन भागों में विभाजित होगा। पहला, हम मसीह की दिव्यता या उसके ईश्वरत्व के बारे में बाइबल की शिक्षा की जाँच करेंगे। दूसरा, हम त्रिएकता में उसकी भूमिका को देखेंगे। और तीसरा, हम उसकी अनंत सम्मति का वर्णन करेंगे। आइए, हम परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के ईश्वरत्व से आरंभ करें।

ईश्वरत्व

बाइबल अनंतता से नहीं आई है। यह समय और इतिहास के दौरान लिखी गई है। और यह यीशु को नए नियम के आने तक त्रिएकता में एक अलग व्यक्तित्व के रूप में स्पष्ट प्रकट भी नहीं करती है। फिर भी, पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है कि यीशु सारी अनंतता से परमेश्वर है। अतः नए नियम में उसके ईश्वरत्व के बारे में जिन बातों को यह प्रकट करता है, वे उसके बारे में सृष्टि से पहले भी सत्य थीं। और वे सदा तक निरंतर सत्य बनी रहेंगी। जैसा कि हम इब्रानियों 13:8 में पढ़ते हैं :

> **यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है। (इब्रानियों 13:8)**

यीशु का ईश्वरत्व कई रूपों में नए नियम में स्पष्ट दिखाई देता है। पहला, पवित्रशास्त्र में बहुत सारे ऐसे स्पष्ट कथन हैं कि वह ईश्वर, अर्थात् परमेश्वर है। दूसरा, नए नियम के कुछ अनुच्छेद ऐसे रूपों में पुराने नियम का प्रयोग उस पर करते हैं जो उसके ईश्वरत्व को दर्शाते हैं। और तीसरा, कुछ अनुच्छेद उसमें ईश्वरीय गुणों को दर्शाते हैं। हम यीशु के ईश्वरत्व के प्रमाण के लिए इनमें से प्रत्येक के कुछ उदाहरणों को देखेंगे। आइए स्पष्ट कथनों के साथ आरंभ करें।

स्पष्ट कथन

बहुत से अनुच्छेद स्पष्ट तौर पर यीशु का उल्लेख परमेश्वर के रूप में करने के द्वारा उसके ईश्वरत्व की शिक्षा देते हैं। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 20:28 में प्रेरित थोमा ने यीशु को "हे मेरे परमेश्वर" कहा। तीतुस 2:13 में पौलुस ने यीशु को "अपना महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह" कहा। 2 पतरस 1:1 में पतरस ने यीशु को "हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह" कहा। और 1 यूहन्ना 5:20 में यूहन्ना ने यीशु को "सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन" कहा। परंतु शायद सबसे ज्यादा प्रचलित अनुच्छेद जो स्पष्ट रूप से ईश्वरत्व को यीशु के साथ जोड़ता है, वह यूहन्ना 1:1 है, जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> **आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। (यूहन्ना 1:1)**

यह पद विशेष तौर पर कहता है कि "वचन परमेश्वर था," और यह कि वह परमेश्वर के साथ आरंभ से था, अर्थात् सृष्टि की रचना के पहले से। और इस अध्याय में आगे, 14-18 पदों में, यूहन्ना ने स्पष्ट

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

रूप से कहा कि जिस वचन के बारे में वह बात कर रहा था, वह मसीह था। इस प्रकार यूहन्ना ने कोई संदेह नहीं छोड़ा कि यीशु ही परमेश्वर है। वह हर प्रकार से पूर्ण ईश्वरीय रहा है और आगे भी रहेगा।

पुराना नियम

दूसरा, स्पष्ट कथनों द्वारा यह कहने कि यीशु परमेश्वर है, के अतिरिक्त नया नियम भी इस प्रकार से यीशु के ईश्वरत्व को प्रदर्शित करता है जैसे यह परमेश्वर के प्रति पुराने नियम के उल्लेखों को प्रदर्शित करता है।

बहुत से अवसरों पर, नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के प्रभु के साथ उसकी तुलना करने के द्वारा यीशु को परमेश्वर के रूप में पहचाना है। पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने आपको अपने लोगों के समक्ष यहोवा के नाम से प्रकट किया, जिसका अनुवाद सामान्यतः "प्रभु" के रूप में किया जाता है। नए नियम में कई स्थानों पर लेखकों ने ऐसे अनुच्छेदों का उल्लेख किया है जो स्पष्ट रूप से यहोवा, अर्थात् प्रभु के बारे में हैं, और कहा कि ये अनुच्छेद यीशु के बारे में बात कर रहे थे।

उदाहरण के लिए, मरकुस 1:2-3 दर्शाता है मलाकी 3:1, और यशायाह 40:3 को, जो कहते हैं कि एक भविष्यद्वक्ता या संदेशवाहक प्रभु के आगे चलेगा। परंतु फिर मरकुस ने कहा कि ये भविष्यवाणियाँ तब पूरी हुईं जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु के लिए पहले आकर मार्ग तैयार किया। इस प्रकार मरकुस ने दर्शाया कि यीशु ही प्रभु, यहोवा है, जिसके बारे में मलाकी और यशायाह ने भविष्यवाणियाँ की थीं।

पौलुस ने फिलिप्पियों 2:11 में यीशु और यहोवा के बीच इसी प्रकार के संबंध को दर्शाया, जहाँ पर उसने यह मूलभूत मसीही घोषणा की कि यीशु ही प्रभु है। और यूहन्ना 1:1-3 में यूहन्ना ने यीशु की पहचान परमेश्वर के वचन के रूप में की जिसके द्वारा परमेश्वर ने आरंभ में सृष्टि की रचना की थी। यह उत्पत्ति 1:1 के प्रति एक स्पष्ट संकेत था, जहाँ मूसा ने यह लिखा है, "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।" यीशु के सृष्टि की रचना में भागी होने का यह उल्लेख दर्शाता है कि वह वास्तव में स्वयं परमेश्वर है।

ईश्वरीय गुण

तीसरा, यह दावा करने के लिए कि यीशु परमेश्वर है, स्पष्ट कथनों और पुराने नियम का प्रयोग करने के अतिरिक्त नए नियम के लेखकों ने उसके साथ ईश्वरीय गुणों को जोड़ा - ऐसे गुण जो केवल परमेश्वर में हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 1:3 कहता है :

> **वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से संभालता है। (इब्रानियों 1:3)**

यहाँ पुत्र को परमेश्वर और उसकी महिमा के समतुल्य इस रूप में रखा गया है जो पुत्र के ईश्वरत्व को दर्शाता है। इसके साथ-साथ पुत्र परमेश्वर की असीमित सृजनात्मक और संभालने वाली सामर्थ्य का प्रयोग करता है। कोई भी सीमित प्राणी असीमित सामर्थ्य को प्राप्त नहीं कर सकता; केवल असीमित परमेश्वर ही ऐसा कर सकता है। अतः पुत्र अवश्य स्वयं परमेश्वर है। और यूहन्ना 1:1-2 जब यह कहता है तो यीशु के ईश्वरत्व की पुष्टि करता है :

> **आदि में वचन था . . . यही आदि में परमेश्वर के साथ था। (यूहन्ना 1:1-2)**

जब यूहन्ना ने कहा कि वचन "आदि में" अस्तित्व में था, तो उसके कहने का अर्थ था कि पुत्र कुछ भी रचे जाने से पूर्व अनंतता से अस्तित्व में था, जैसे कि उत्पत्ति 1:1 सिखाता है कि परमेश्वर सृष्टि से पूर्व सारी अनंतता से अस्तित्व में था। दूसरे शब्दों में, पुत्र की सृष्टि नहीं हुई है। वह पूरी अनंतता से

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर पिता के साथ अस्तित्व में था। और क्योंकि केवल परमेश्वर ही अनंत अस्तित्व का गुण रख सकता है, इसलिए पुत्र का स्वयं परमेश्वर होना अवश्य है।

क्योंकि हमने यह देख लिया है कि मसीह में पूर्ण ईश्वरत्व पाया जाता है, इसलिए अब हम पुत्र और त्रिएकता के अन्य व्यक्तित्वों के बीच के संबंधों को देखने के लिए तैयार हैं।

त्रिएकता

त्रिएकता की धर्मशिक्षा मसीही विश्वास के लिए महत्वपूर्ण है। एक ओर त्रिएकता उन धर्मशिक्षाओं में से एक है जो हमें सिखाती हैं कि परमेश्वर को समझना हमारी सारी योग्यताओं से बहुत ऊपर की बात है। यह हमें सिखाती है कि परमेश्वर रहस्यमयी और अद्‌भुत है, और इसलिए यह हमें उसकी आराधना करने के लिए प्रेरित करता है। परंतु दूसरी ओर यह धर्मशिक्षा मसीहियत को बाकी के सभी धर्मों से अलग करती है। जहाँ कुछ धर्म परमेश्वर को केवल एक व्यक्ति के रूप में देखते हैं, और अन्य यह मानते हैं कि बहुत सारे देवता हैं, वहीं पवित्रशास्त्र की त्रिएकता की धर्मशिक्षा हमें यह सिखाती है कि परमेश्वर एक अर्थ में तीन है, और दूसरे अर्थ में एक है। और ऐतिहासिक रूप में, यह विशिष्ट मसीही धर्मशिक्षा मसीह के प्रति हमारे अंगीकार के केंद्र में रही है।

त्रिएकता शब्द बाइबल में कहीं नहीं पाया जाता, परंतु यह बाइबल की इस विचारधारा को व्यक्त करता है कि परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व हैं, परंतु तत्व एक ही है। शब्द व्यक्तित्व यहाँ एक भिन्न, आत्मज्ञात व्यक्तित्व का उल्लेख करता है। पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है कि परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हैं। और शब्द “तत्व” परमेश्वर की मूलभूत प्रकृति या उस सार को दर्शाता है जो उसमें पाया जाता है।

> त्रिएकता की मसीही धर्मशिक्षा यह सिखाती है कि एक परमेश्वर का अस्तित्व अनंत रूप से तीन व्यक्तित्वों, अर्थात् परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा की एकता में पाया जाता है। परमेश्वर के प्रति इस निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए मसीहियों को कई सदियों तक पवित्रशास्त्र से जूझना पड़ा। इस धर्मशिक्षा के विकास की मौलिक प्रेरणा जी उठे और महिमान्वित मसीह की आरंभिक मसीही आराधना से मिली है; पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से सिखाता है कि यीशु ईश्वरीय है। उन्होंने इसे यह कहते हुए व्यक्त किया कि पुत्र की प्रकृति भी वही है जो पिता की है। फिर मसीहियों ने परमेश्वर के एक होने के साथ मसीह की आराधना का सांमजस्य कैसे बैठाया? इसकी कुंजी व्यक्तित्व और प्रकृति के बीच की भिन्नता थी। अंत में, विश्वासियों को पवित्रशास्त्र से यह मार्गदर्शन मिला कि वे परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के अस्तित्व में तो एक होने परंतु व्यक्तित्वों में भिन्न होने की पुष्टि करें। संक्षेप में, एक परमेश्वर तीन व्यक्तित्वों, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, के अस्तित्व की एकता में पाया जाता है।
>
> —डॉ. कीथ जॉनसन

धर्मविज्ञानियों ने सामान्य तौर पर त्रिएकता का वर्णन दो दृष्टिकोणों से किया है। एक ओर तो उन्होंने त्रिएकता के सदस्यों के बीच में सात्विक संबंधों की बात की है। और दूसरी ओर उन्होंने वैधानिक संबंधों की बात भी की है। हम दोनों विचारों को संक्षेप में देखेंगे, हम त्रिएकता में सात्विक संबंधों के साथ आरंभ करेंगे।

सात्विकता

शब्द “सात्विकता” (अस्तित्व मीमांसा संबंधी) का अर्थ “स्वयं के साथ संबंधित” होने से है। इसलिए, जब हम त्रिएकता को व्यक्तित्वों के बीच सात्विक संबंधों पर ध्यान देते हैं, तो हमारी रूचि इस बात में होती है कि वे एक दूसरे के साथ कैसे जुड़े हुए हैं, और इस बात में भी कि वे एक ईश्वरीय सार या प्रकृति को कैसे रखते हैं। क्योंकि परमेश्वर के तीनों व्यक्तित्वों में एक जैसा ईश्वरीय सार है, इसलिए वे सब एकसमान ईश्वरीय गुणों को रखते हैं, जैसे कि अनश्वरता, अनंतता और अपरिवर्तनीयता।

फिलिप्पियों 2:5-8 में, पौलुस ने इस तरीके से त्रिएकता के इस पहलू पर बातचीत की है :

> मसीह यीशु . . . ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और . . . अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। (फिलिप्पियों 2:5-8)

यह अनुच्छेद यीशु के बारे में बहुत कुछ कहता है। परंतु हम अपना ध्यान इस कथन पर लगाना चाहते हैं, "परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी"। इस वाक्यांश में पौलुस ने स्पष्टता से यह सिखाया कि पुत्र पिता परमेश्वर के जैसा ईश्वरीय स्वभाव या सार रखता है। और अन्य अनुच्छेद ये दर्शाते हैं कि यही बात पवित्र आत्मा पर भी लागू होती है। वे सब एक ही ईश्वरीय प्राणी हैं। जैसे यीशु ने यूहन्ना 10:30 में कहा

> मैं और पिता एक हैं। (यूहन्ना 10:30)

उन अविश्वासियों ने जिन्होंने यीशु को इस आश्चर्यचकित कर देने वाले कथन को कहते हुए सुना तो वे समझ गए कि वह परमेश्वर होने का दावा कर रहा है, और उन्होंने ईश-निंदा के कारण उस पर पत्थरवाह करने का प्रयास किया।

अब जबकि हमने सात्विक त्रिएकता के बारे में बाइबल की शिक्षा पर विचार कर लिया है, इसलिए आइए अब देखें कि पवित्रशास्त्र त्रिएकता में आर्थिक संबंधों के बारे में क्या सिखाता है।

आर्थिक

शब्द "आर्थिक" का अर्थ "घरेलू प्रबंधन से संबंधित" है। इसलिए जब हम त्रिएकता में आर्थिक संबंधों के बारे में बात करते हैं, तो हमारी रूचि इस बात में है कि कैसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा आपस में एक दूसरे से संबंधित हैं और कैसे एक दूसरे से परस्पर व्यवहार करते हैं। जैसा कि हम देख चुके हैं, सात्विकता के दृष्टिकोण से पुत्र में वही दैवीय सार पाया जाता है जो पिता और पवित्र आत्मा में है। परंतु उनके आर्थिक संबंधों में, पुत्र पिता की इच्छा के प्रति समर्पित होता है, और वह पवित्र आत्मा पर अधिकार रखता है। जैसा कि यूहन्ना 6:38 में यीशु ने कहा :

> क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ। (यूहन्ना 6:38)

और उसने यूहन्ना 8:28-29 में यह कहा :

> मैं अपने आप से कुछ नहीं करता परंतु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया वैसे ही ये बातें कहता हूँ। मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है।” (यूहन्ना 8:28-29)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

त्रिएकता की आर्थिकता में, पुत्र सदैव पिता के अधिकार और इच्छा के प्रति समर्पित रहता है। और जिस प्रकार पिता का पुत्र पर अधिकार है, उसी प्रकार पिता और पुत्र का पवित्र आत्मा पर अधिकार है। पुत्र ने यूहन्ना 15:26 में पवित्र आत्मा पर अपने अधिकार के बारे में कहा है, जहाँ उसने यह कहा :

> **परंतु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा . . . तो वह मेरी गवाही देगा। (यूहन्ना 15:26)**

जिस प्रकार पिता के पास पुत्र को भेजने का अधिकार है, उसी प्रकार पुत्र के पास आत्मा को भेजने का अधिकार है।

अब, निःसंदेह त्रिएकता के व्यक्तित्वों में कभी कोई मतभेद नहीं हुआ। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सदैव परस्पर सहमत होते हैं। वे एक ही मन के हैं। यहाँ तक कि उनके संबंधों की आर्थिकता में भी पदों का एक स्पष्ट क्रम है, जिसमें पिता का अधिकार सबसे ऊँचा है, और फिर पुत्र का है, और अंत में पवित्र आत्मा का है।

त्रिएकता की प्रकृति को और त्रिएकता के व्यक्तित्वों के बीच के संबंधों को पूरी तरह से समझना हमारे लिए असंभव है। हम विश्वास के द्वारा जानते हैं कि जो कुछ पवित्रशास्त्र प्रकट करता है, वह सत्य है। परंतु हमें यह अंगीकार करना है कि त्रिएकता के बहुत सारे पहलू हमारी समझ से परे हैं। परंतु फिर भी, हम इस वास्तविकता में शांति और उत्साह को प्राप्त कर सकते हैं कि त्रिएकता के सभी सदस्य एकसाथ मिल कर हमारे उद्धार के लिए कार्य करते हैं। पिता, पुत्र के द्वारा किए गए बलिदान के आधार पर हमें क्षमा करता है। और पिता और पुत्र दोनो हमारे जीवनों में हमें नया जीवन देने और हमें नया करने के लिए आत्मा को भेजते हैं, जब तक कि पुत्र हमारे उद्धार को पूरा करने के लिए वापस नहीं आ जाता।

हमने यीशु के ईश्वरत्व और त्रिएकता को देखने के द्वारा अनंतता में उसके व्यक्तित्व और कार्य की खोज कर ली है। इसलिए अब आइए उसकी अनंत सम्मति की ओर ध्यान दें।

सम्मति

धर्मविज्ञानीय शब्द अनंत सम्मति जिसे अक्सर “अनंत आदेश” कहा जाता है, ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर की योजना को दर्शाता है, जो सृष्टि के उसके कार्य से पहले स्थापित कर दी गई थी। परमेश्वर की अनंत सम्मति का उल्लेख प्रेरितों के काम 2:23, रोमियों 8:28-30, और 1 पतरस 1:2 में किया गया है।

विभिन्न धर्मवैज्ञानिक परंपराओं में परमेश्वर की योजनाओं की प्रकृति और व्यापकता के बारे में विभिन्न प्रकार की धारणाएँ पाई जाती हैं। कुछ मानते हैं कि परमेश्वर की अनंत योजना में इतिहास का हरेक विवरण सम्मिलित होता है। अन्य मानते हैं कि परमेश्वर ने कुछ बातों को तो नियत कर दिया है और कुछ को नहीं। परंतु हम सब सहमत हैं कि जो कुछ मसीह ने पूरा किया है वह परमेश्वर की योजना का केंद्र है - कि परमेश्वर ने उसमें उद्धार को निर्धारित किया है और मसीह असफल नहीं होगा। जैसा कि हम इफिसियों 1:4, 11 में पढ़ते हैं :

> **(परमेश्वर) ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले (मसीह) में चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों . . . उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने। (इफिसियों 1:4, 11)**

जो परमेश्वर ने मसीह में किया वह कोई एक संयोग मात्र या फिर पहले से दिखाई न देने वाली किसी समस्या का समाधान नहीं था; यह परमेश्वर के अनंत आदेश के द्वारा स्थापित किया गया था। अब, जब हम मसीह के विषय में परमेश्वर की अनंत सम्मति के बारे में सोचते हैं, तो यह हमें इन पहलुओं को

पहचानने में सहायता करती है : पूर्वज्ञान और उद्देश्य। एक अनुच्छेद जहाँ परमेश्वर की अनंत सम्मति के ये दोनों पहलू स्पष्ट दिखाई देते हैं, वह है यशायाह 46:10। सुनिए परमेश्वर ने वहाँ क्या कहा :

> **मैं तो अंत की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, 'मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा।' (यशायाह 46:10)**

अपने पूर्वज्ञान के बारे में परमेश्वर ने आरंभ से ही कहा है, अर्थात् इससे पहले की संसार की रचना हुई, वह जानता था कि आगे क्या होने वाला था। और उसके उद्देश्य के बारे में उसने कहा, "मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करुँगा।" आइए इन दोनों विचारों को थोड़ा और विस्तार से देखें।

एक ओर, हम शब्द पूर्वज्ञान को यह कहते हुए परिभाषित कर सकते हैं कि यह सृष्टि से पहले ही उन घटनाओं के विषय में परमेश्वर के ज्ञान को दर्शाता है जो कि इतिहास के घटनाक्रम में घटित होंगे। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सर्वज्ञानी हैं। और उनका ज्ञान भविष्य तक भी फैला है। इस विचार को यशायाह 46:10 में देखने के अतिरिक्त हम इसे यशायाह 42:9 और 45:11-13; और प्रेरितों के काम 15:17, 18 जैसे स्थानों में भी पाते हैं।

दूसरी ओर, परमेश्वर द्वारा ब्रह्मांड की सृष्टि करने के उद्देश्य का वर्णन कई तरीकों से किया जा सकता है। इस अध्याय में हम यह कहते हुए इसे सारगर्भित करेंगे कि परमेश्वर ने ब्रह्मांड की रचना मसीह में अपने राज्य की महिमा को प्रकट करने और उसे बढ़ाने के लिए की है। हम इस उद्देश्य को संपूर्ण पवित्रशास्त्र में व्यक्त होता हुआ देखते हैं, जैसे भजन 145:1-21. 1 तीमुथियुस 1:17, इब्रानियों 1:1-13, 1 पतरस 1:20-2:9, और प्रकाशितवाक्य 1:5-6।

हाल ही की सदियों में कुछ धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर के महिमामय राज्य के विषय में उसके अनंत आदेश का वर्णन छुटकारे की वाचा के रूप में करने को सहायक पाया है। पवित्रशास्त्र दर्शाता है कि इस संसार की रचना से पहले परमेश्वरत्व के व्यक्तित्वों ने छुटकारे को प्रदान करने के लिए एक औपचारिक व्यवस्था बैठाई और इसे पतित सृष्टि पर लागू किया। विशेषकर पुत्र ने प्रतिज्ञा की वह देहधारण करेगा और पाप के परिणामों के कारण पतित मनुष्यजाति को छुड़ाने के लिए मृत्यु को सहेगा। और पिता ने प्रतिज्ञा की कि वह पापियों के छुटकारे के लिए अदा किए जाने वाले पुत्र के बलिदान को स्वीकार करेगा । कुछ धर्मविज्ञानी इसमें पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा को भी जोड़ते हैं कि वह छुटकारा पाए पापियों पर उद्धार को लागू करेगा।

> **यह वह समझौता था जिसमें पिता अपने लोगों के लिए उद्धार के कार्य की योजना बनाता है। वह यह भी निर्धारित करता है कि वह पुत्र को एक देह, अर्थात् एक भौतिक देह प्रदान करेगा जिसमें पुत्र आएगा और देहधारण करेगा। और पुत्र इस पृथ्वी पर आने, क्रूस पर अपना जीवन बलिदान करने - एक सिद्ध जीवन - उस सिद्ध जीवन को क्रूस पर बलिदान करने और परमेश्वर के लोगों के लिए एक स्थानापन्न बनने को सहमत होता है। इसी के साथ-साथ, छुटकारे की वाचा का एक भाग पवित्र आत्मा को भेजना भी है जो मसीह के कार्य को लेकर उसे परमेश्वर के लोगों पर लागू करता है।**
>
> — डॉ. जैफ लोमैन

हमारी समझ के लिए छुटकारे की वाचा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन बातों को स्पष्ट करके एक रूपरेखा प्रदान करती है जिन्हें यीशु ने अपने देहधारण में पहले ही कर दिया है और अब भी निरंतर कर

रहा है। छुटकारे की वाचा में जो प्रतिज्ञाएँ सम्मिलित हैं, वे भजन संहिता 110, और इफिसियों 1:3-6 में पाई जाती हैं। और उनकी संभावना 1 पतरस 1:20, और प्रकाशितवाक्य 13:8 जैसे स्थानों में भी दिखाई देती है। केवल एक उदाहरण के लिए, यूहन्ना 6:38-40 में यीशु के शब्दों को सुनिए :

> क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ; और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ, परंतु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ। क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, वह अनंत जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला ऊठाऊँगा। (यूहन्ना 6:38-40)

> छुटकारा एक ऐसा विषय है जो अनंत सम्मति के साथ संबंधित होता है जो संसार की सृष्टि होने से पहले परमेश्वर के मन में आ गया था। हम इन सभी रहस्यों की थाह नहीं पा सकते। स्पष्टतः, परमेश्वर अनंत है और कुछ चीजें हमसें छिपी रहती हैं, और परमेश्वर ने उन्हें हमारे लिए प्रकट नहीं किया है, परंतु हम उस सब कुछ को समझना चाहते हैं जिसे परमेश्वर ने इसके बारे में प्रकट किया है, और हमारे पास पवित्रशास्त्र में इसके संकेत मिलते हैं कि त्रिएक परमेश्वर में एक वाचा रची गई थी जो अनंतता में उसकी महिमा का प्रकाशन होगी। इसलिए परमेश्वर के अलावा सभी प्राणी उसकी महिमा का आनंद लेंगे, और ये खत्म न होने वाला बढ़ता हुआ आनंद होगा। और पवित्रशास्त्र से ऐसा प्रकट होता है कि परमेश्वर ने इसे छुटकारे के उद्देश्य रूप में किया, अर्थात् दंड पाने वाले पापी मनुष्यों को लेना और उन्हें छुटकारा देना। और इसलिए जितना हम पवित्रशास्त्र से बता सकते हैं, वह यह है कि इस संसार की नींव से पहले, इस संसार की रचना से पहले वाचा का प्रबंध किया गया था जिसमें पिता लोगों को चुनता है, पुत्र मरने और लोगों को छुटकारा दिलाने के लिए आता है, पवित्र आत्मा फिर लोगों में से पाप की भ्रष्टता अर्थात् पतन को दूर करते हुए उन्हें निकट ले आता है कि वे पश्चाताप करें और मसीह को ग्रहण कर लें।
>
> — डॉ. थॉमस नैटल्स

परमेश्वर की अनंत सम्मति सब विश्वासियों के लिए राहत का एक बड़ा स्रोत होना चाहिए। इससे पहले की परमेश्वर ने ब्रह्मांड की रचना की, उसने अपनी महिमा को प्रकट करने के लिए सृष्टि, और उसके उपकारी शासन के अधीन सारी मनुष्यजाति के रहने के लिए एक उपयुक्त स्थान की रूपरेखा तैयार की। और उसके पूर्वज्ञान के कारण कोई भी बात उसे अचंभित नहीं करती। मनुष्यजाति के पाप में पतन के कारण परमेश्वर को आघात नहीं पहुँचा था। और हमारा उद्धार उसका अचानक से किया गया प्रयास नहीं है कि वह उसे फिर से जोड़ दे जो अनपेक्षित रूप से टूट गया हो। इसके विपरीत, सब कुछ उसकी योजना के अनुसार होता है। और जैसा कि यह अद्‌भुत है, यही परमेश्वर - ब्रह्मांड का शिल्पकार और सृष्टिकर्त्ता - यीशु नासरी के रूप में देहधारी हुआ। उसने अनंत उद्देश्यों के अनुसार सृष्टि में प्रवेश किया कि उसे और हमें पुनर्स्थापित करे।

अब जबकि हमने अनंतता में पुत्र के विषय में विचार-विमर्श कर लिया है, इसलिए आइए हमारे ध्यान को सृष्टि के आरंभिक समय की ओर लगाएँ।

सृष्टि

इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए हम सृष्टि के आरंभिक समय को इस प्रकार परिभाषित करेंगे कि वह सृष्टि के सप्ताह के साथ आरंभ हुआ और मनुष्यजाति के पाप में पतन एवं अदन की वाटिका से निष्कासन के साथ समाप्त हुआ। पूरी बाइबल में इन घटनाओं का उल्लेख पाया जाता है। परंतु मूल स्थान जहाँ बाइबल इनका वर्णन करती है, वह है उत्पत्ति 1-3।

हम दो शीर्षकों की ओर देखते हुए सृष्टि के समय के दौरान पुत्र के कार्य की खोज करेंगे : पहला सृष्टि का सप्ताह जब परमेश्वर सबसे पहले ब्रह्मांड को अस्तित्व में लेकर आया; और दूसरा, मनुष्यजाति का पाप में पतन। आइए सृष्टि के सप्ताह के कार्य से आरंभ करें।

सृष्टि का सप्ताह

अब, जब मसीही परमेश्वर के द्वारा संसार की रचना किए जाने के बारे में बात करते हैं, तो हमारा ध्यान सामान्यत: पिता परमेश्वर के व्यक्तित्व की ओर चला जाता है। परंतु पवित्रशास्त्र दर्शाता है कि सृष्टि की रचना किये जाने के समय पुत्र पिता के साथ था, और पिता ने उसके द्वारा ही संसार की रचना की। ये तथ्य यूहन्ना 1-1:3 और इब्रानियों 1:2 जैसे स्थानों में सिखाए गए हैं।

> जब हम पुत्र परमेश्वर के ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता होने के बारे मे सोचते हैं, तो जो अनुच्छेद हमारे मन में आता है वह कुलुस्सियों 1 है, जो कि एक समृद्ध अनुच्छेद है और यह हमें याद दिलाता है कि सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा, और सारी वस्तुएँ उसी के लिए सृजी गई हैं, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं, और इस तरह से यह वास्तविक व्यावहारिक भाग की ओर आता है। इसका अर्थ यह है कि हम आश्वस्त रह सकते हैं कि वही जिसने इस सृष्टि को बनाया और आकार दिया और जो प्राकृतिक नियमों के कुछ संयोजनों और अपनी ईश्वरीय इच्छा के द्वारा इसे स्थिर रखता है, वह इस सृष्टि का भाग होने के रूप में और अपने आत्मा में पुनः बनाए जाने के रूप में व्यावहारिक तरीके से जानता है कि हम कैसी परिस्थिति से होकर जाते हैं। इसलिए परमेश्वर के वास्तविक उद्देश्य और आज के लिए परमेश्वर के प्रबंध के साथ संबंधित होने में आशीष है।
>
> — डॉ. जेम्स डी. स्मिथ III

उदाहरण के लिए, कुलुस्सियों 1:16 को सुनिए कि यह सृष्टि में पुत्र के सम्मिलित होने के बारे में क्या कहता है :

> क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी . . .सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। (कुलुस्सियों 1:16)

इस अनुच्छेद में पौलुस ने स्पष्ट कहा कि सृष्टि पुत्र के द्वारा हुई है।

> सृष्टि के आरंभ में पुत्र लोगोस अर्थात् सत्य वचन के रूप में अस्तित्व में था। इसलिए उत्पत्ति 1 में परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो जाए।" परमेश्वर ने कहा, "आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> दे।" तब यूहन्ना के सुसमाचार में यूहन्ना ने ये उदघोषणा की, "वचन देहधारी हुआ।" इसलिए हम ब्रह्मांड को इसी तरीके से समझते हैं – सृष्टिकर्ता से सृष्टि तक, परमेश्वर से मनुष्यजाति तक। क्यों? क्योंकि हम संसार को परमेश्वर के प्रबंधनीय सिद्धांत के द्वारा समझते हैं। और यह सिद्धांत काल्पनिक नहीं है। यह सत्य, वचन और लोगोस है। अतः संपूर्ण ब्रह्मांड को ऐसे समझा जा सकता है जैसे कि यह परमेश्वर के लोगोस के द्वारा चलाया जा रहा है।
>
> — डॉ. स्टीफन चान, अनुवाद

> आप जानते हैं, जब हम नए नियम को पढ़ते हैं तो हम बहुत सारी आश्चर्यचकित कर देने वाली बातों को पाते हैं, और हम पुराने नियम को एक नई ज्योति में पढ़ते हैं। उदाहरण के लिए, यूहन्ना के सुसमाचार की प्रस्तावना से जिस एक बात को हम पाते हैं, वह यह है कि मसीह आरंभ से है। मसीह पुराने नियम के हरेक पद में है। परंतु हम पीछे चलते हुए सृष्टि तक पहुँचते हैं और यूहन्ना हमें बताता है कि रचना करने वाला मसीह, वचन, परमेश्वर का लोगोस ही था जिसके द्वारा परमेश्वर ने संसार की रचना की है। और तब आप कुलुस्सियों जैसी जगह पर पहुँचते हैं, और पौलुस हमें बताता है कि पुत्र ने न केवल संसार की रचना की बल्कि वही सब चीजों को अस्तित्व में लेकर आया, हमें उत्पत्ति में कहा गया है कि परमेश्वर ने कहा - यह मौखिक रचना थी। यह वचन था जिसके द्वारा उसने बोला था। हम समझ जाते हैं कि वचन मसीह है।
>
> — डॉ. आर. एल्बर्ट मोहलर, जूनियर

रुचि की बात यह है कि बाइबल में सृष्टि का वर्णन इस बात पर ध्यान देते हुए आरंभ नहीं होता कि आकाश और पृथ्वी की सृष्टि से पहले क्या कुछ घटित हुआ। इसकी अपेक्षा, यह अपना समय यह बताते हुए बिताता है कि परमेश्वर ने कैसे अपनी पसंद के अनुसार ब्रह्मांड को व्यवस्थित किया और भरा, अर्थात् उन रूपों में जो ब्रह्मांड के लिए उसकी अनंत योजनाओं के अनुरुप थे। उत्पत्ति 1:1 सृष्टि की रचना का शीर्षक है जो हमें यह बताता है कि परमेश्वर ही सृष्टिकर्ता था। तब उत्पत्ति 1:2 हमें संसार की ठीक आरंभिक अवस्था के बारे में बताता है। जैसा कि हम वहाँ पढ़ते हैं :

> पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था। (उत्पत्ति 1:2)

इससे पहले कि परमेश्वर ने ब्रह्मांड को व्यवस्थित किया और उसे भरा, यह बेडौल था, इसका कोई आकार या ढाँचा नहीं था; और यह सुनसान पड़ा हुआ था जिसमें किसी प्राणी का वास नहीं था। ऐसी अवस्था में संसार परमेश्वर के महिमामय राज्य के योग्य न था। इसलिए उसने अपनी सृष्टि को भरने और व्यवस्थित करने में छ: दिन लगाए। और जिस तरीके से उसने यह किया उससे संसार के लिए उसके अनंत उद्देश्य के कुछ मूलभूत आयाम प्रकट हुए।

सृष्टि के पहले तीन दिनों के दौरान परमेश्वर ने इस संसार की रचना की या उसे एक आकार दिया। अपने वचन के सामर्थ्य से उसने अंधकार को उजियाले से, समुद्र को आकाश से और सूखी भूमि को जल से अलग किया। और उसने साग-पात को उन प्राणियों के भोजन के तौर पर सृजा जिनकी रचना वह बाद में करेगा।

सृष्टि के अंतिम तीन दिनों में परमेश्वर ने सुनसान संसार को भर दिया ताकि उसका राज्य सही रूप में व्यवस्थित हो जाए और उसका प्रबंधन किया जाए। उसने ऋतुओं की पहचान के लिए सूर्य, चन्द्रमा और तारों को सृजा, और उसने सूर्य को दिन पर शासन करने के लिए, और चन्द्रमा को रात पर शासन करने के लिए निर्धारित किया। फिर उसने मछलियाँ और समुद्र के अन्य प्राणियों की रचना की कि वे जल में भर जाएँ, और पक्षियों की रचना की कि वे आकाश में भर जाएँ, और भूमि पर रहने वाले जानवरों की रचना की कि वे सूखी भूमि में भर जाएँ। और फिर उसने मनुष्यजाति की रचना की कि वे पृथ्वी को भर दें और जल, आकाश एवं भूमि पर रहने वाले सब प्राणियों पर राज्य करें। उत्पत्ति 1:27-28 में मनुष्यजाति की रचना के विवरण को सुनें :

> तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओ पर अधिकार रखो।" (उत्पत्ति 1:27-28)

> पवित्रशास्त्र, विशेषकर उत्पत्ति की पुस्तक, नि:संदेह हमें बताती है कि मनुष्यजाति के परमेश्वर के साथ मूल संबंध का वर्णन गहराई से इन रूपों में किया गया है : सबसे पहले, मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि का शिखर हैं। छ: दिनों की समाप्ति पर वहाँ लिखा है, "परमेश्वर ने कहा, 'हम मुनष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ।'" और परमेश्वर ने अपने स्वरूप और समानता में मनुष्य को नर और नारी करके बनाया। इसलिए मनुष्य के पास शिखर जैसा संबंध है, जो कुछ परमेश्वर करना चाहता था उसका सार कि अपने स्वरुप और समानता को इस सृष्टि में रखे। और इसलिए उत्पत्ति का दूसरा अध्याय उसी वास्तविकता का इन शब्दों में वर्णन करता है : परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया, परमेश्वर अपने ईश्वरीय जीवन को आदम के साथ साझा करता है। अतः मनुष्य के परमेश्वर के साथ मूल संबंध का वर्णन शायद इन शब्दों में बहुत अच्छी तरह से किया गया है : मनुष्यों का कार्य परमेश्वर के मित्र, परमेश्वर की संतान, सृष्टि में परमेश्वर के सहभागी होना है कि वे परमेश्वर की सेवा करें, पर केवल सेवा करने के लिए ही नहीं, परंतु सबसे महत्वपूर्ण यह है कि वे परमेश्वर को जानें और उससे प्रेम करें।
>
> — डॉ. स्टीव ब्लैकमोरे

सृष्टि के सप्ताह के छठे दिन की समाप्ति पर परमेश्वर ने अपने विशेष राज्य होने के लिए ब्रह्मांड की रचना कर ली थी, और उसने मनुष्यजाति को नियुक्त किया कि वे पृथ्वी पर ऐसे राज्य करें जिससे परमेश्वर की महिमा हो। इस बात को ध्यान में रखते हुए, आइए एक बार फिर से कुलुस्सियों 1:16 को देखें, जहाँ पौलुस ने सृष्टि में पुत्र की भूमिका के बारे में इन शब्दों को लिखा :

> क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। (कुलुस्सियों 1:16)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ध्यान दें कि इस अनुच्छेद में, पौलुस सिंहासनों, प्रभुताओं, प्रधानताओं और अधिकारों पर जोर देता है। बाइबल में सृष्टि केवल अस्तित्व के बारे में नहीं है। यह राजनैतिक शक्ति का विषय भी है। संसार इसलिए विद्यमान है कि वह उसके विशेष पुत्र के अधिकार में परमेश्वर का विशेष राज्य बने। हम इसी संबंध को इब्रानियों 1:2 के शब्दों में देखते हैं :

> (परमेश्वर ने) इन अंतिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है। (इब्रानियों 1:2)

यहाँ इब्रानियों के लेखक ने इस विचार को कि पुत्र परमेश्वर सृष्टि में क्रियाशील था, इस तथ्य के साथ जोड़ा कि वह "सारी वस्तुओं का उत्तराधिकारी" था, अर्थात्, वह ऐसा राजा था जो पूरी सृष्टि पर अधिकार प्राप्त करेगा और उस पर राज्य करेगा। वास्तव में, यह विषय पूरे अध्याय में पाया जाता है।

बाइबल लगातार यह शिक्षा देती है कि सृष्टि की रचना का उद्देश्य परमेश्वर के विशेष राज्य के रूप में सेवा करना है। और नया नियम इसे स्पष्ट कर देता है कि इस राज्य पर शासन परमेश्वर के विशेष पुत्र द्वारा किया जाएगा, जिसके द्वारा और जिससे सृष्टि के कार्य को पूरा किया गया था। हम यह भी कह सकते हैं कि पुत्र का सृजनात्मक कार्य उसके राजत्व और अधिकार की अभिव्यक्ति था। उसका सृष्टि पर अधिकार है, क्योंकि उसने इसे सृजा है। और इसलिए, प्रत्येक सृजी गई वस्तु का कर्त्तव्य है कि वह स्वेच्छा और आज्ञाकारिता के साथ अपने राजा के रूप में पुत्र परमेश्वर के प्रति समर्पित रहे।

> मसीही विश्वास का एक उत्सुकता भरा सत्य यह है कि हमारा प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह न केवल हमें छुटकारा देता है, बल्कि ब्रह्मांड की सृष्टि में भी उसकी एक मुख्य भूमिका थी। हमारा प्रभु और उद्धारकर्ता हमारा मुक्तिदाता है, परंतु वह साथ ही पूर्ण सृष्टिकर्ता और मुक्तिदाता भी है। इसके हमारे लिए कई तरह के विशेष अर्थ हैं। एक यह है कि यह हमें याद दिलाता है कि हमारा उद्धारकर्ता, अर्थात् सबका सृष्टिकर्त्ता कितना महान है। यह एक चौंका देने वाला विचार है, हाँ वास्तव में। यह इस बात को भी सुनिश्चित करता है कि हम कभी भी यह सोचने में भटक न जाएँ कि पुत्र किसी तरह से पिता से कुछ कम है, परंतु इसकी अपेक्षा वह हमारे शक्तिशाली और अद्‌भुत ब्रह्मांड की सृष्टि में पूरा सहभागी है। मैं सोचता हूँ कि यह हमें यह भी याद दिलाता है कि यीशु मसीह का हृदय न केवल उसकी कलीसिया तक पहुँचता है बल्कि पूरी सांसारिक व्यवस्था और सारे प्राणियों तक भी, और जिस छुटकारे की हम मसीह के द्वारा अंत समय में पूर्ण होने की प्रतीक्षा करते हैं, वह कराहती हुई इस सृष्टि का छुटकारा भी होगा। और अंत में मैं सोचता हूँ कि यह इस बात को स्मरण दिलाने वाला है कि जो यीशु मसीह का अनुसरण करते हैं उनके पास एक ऐसा हृदय होना चाहिए जो कि उसके हृदय के अनुसार धड़के और इस संसार तथा इसके निवासियों की देखभाल ठीक वैसे ही करे जैसे इसका सृष्टि करने वाला करता है।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कोर्गी

अब जबकि हमने सृष्टि के सप्ताह के दृष्टिकोण से पुत्र के काम को सृष्टि के कार्य में देख लिया है, इसलिए हम मनुष्य के पाप में पतन को देखने के लिए तैयार हैं।

मनुष्य का पाप में पतन

मनुष्य का पाप में पतन एक दुःखभरी परंतु जानी-पहचानी कहानी है। उत्पत्ति 2 में परमेश्वर ने हमारे पहले माता-पिता, अर्थात् आदम और हव्वा की सृष्टि की, और उन्हें अदन की एक सुंदर वाटिका में रखा। उनका कार्य उस वाटिका की देखभाल करना, और संसार को भरने के लिए वाटिका का विस्तार करने हेतु मनुष्यजाति के लिए वंश को उत्पन्न करना था, ताकि पूरी पृथ्वी परमेश्वर के वास करने के योग्य हो सके। परंतु उत्पत्ति 3 में शैतान ने साँप का रूप धरा और हव्वा को भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के प्रतिबंधित फल को खाने की परीक्षा में डाल दिया। और जब हव्वा ने उसे खा लिया, तो उसने इसमें से कुछ आदम को भी खाने के लिए दिया, और उसने भी वह खाया। यह मनुष्य की ओर से विश्वासघात का पहले कार्य था। आदम और हव्वा ने साँप के शब्दों पर भरोसा किया और परमेश्वर के प्रबंध के प्रति और उसकी आज्ञा के प्रति अविश्वास के साथ कार्य किया।

इसलिए उत्पत्ति 3 में परमेश्वर ने आदम, हव्वा और साँप को श्राप देते हुए इस पाप के प्रति प्रत्युत्तर दिया। इस श्राप के द्वारा दिए गए दंड ने मनुष्यजाति की अवज्ञाकारिता के परिणामों को दर्शाया और सृष्टि के लिए परमेश्वर के उद्देश्य की पूर्णता को विलंबित किया।

परंतु इन सब में पुत्र परमेश्वर की क्या भूमिका थी? हम यह कहते हुए पुत्र के कार्य को सारगर्भित कर सकते हैं कि उसने पिता और पवित्र आत्मा के साथ मनुष्यजाति को श्राप देने में भाग लिया जब मनुष्य ने पाप किया, और यह कि वही वह प्रतिज्ञात मुक्तिदाता था जो अंत में मनुष्यजाति को उन्हीं श्रापों से बचाने के लिए आएगा।

हम मनुष्य के पाप में पतन के दौरान पुत्र परमेश्वर के कार्य की जाँच तीन तरीकों में करेंगे। पहला, हम पाप में पतन के व्यक्तिगत परिणामों की खोज करेंगे। दूसरा, हम इसके सार्वभौमिक परिणामों को देखेंगे। और तीसरा, हम संक्षेप में उस आशा का उल्लेख करेंगे जो कि मनुष्य के पाप में पतन के बाद दी गई थी। आइए पाप में पतन के व्यक्तिगत परिणामों से आरंभ करें।

व्यक्तिगत परिणाम

> रोमियों 5 के अनुसार मनुष्य के पाप में गिरने के कुछ प्रभाव ये हैं, यह कहता है कि एक व्यक्ति के द्वारा, आदम के बारे में बात करते हुए, पाप ने संसार में प्रवेश किया और मृत्यु ने सब मनुष्यों पर अधिकार कर लिया क्योंकि सबने पाप किया था और इसका अर्थ यह है कि सबने ने उसमें पाप किया था। उसने संपूर्ण मनुष्यजाति का प्रतिनिधित्व किया। और जब उसने पाप किया तो उसका दोष संपूर्ण मनुष्यजाति में फ़ैल गया। और साथ ही उसका भ्रष्ट स्वभाव भी फ़ैल गया। इसके बारे में सोचें कि जब परमेश्वर ने आदम की रचना की, तब उसने उसमें जहर की एक छोटी बोतल डाल दी - यह सही नहीं है, परंतु ऐसे सोच के देखिए - उसने आदम से कहा कि यदि तू कभी मेरी इच्छा के विरूद्ध गया तो यह छोटी बोतल टूट जाएगी। फिर भी आदम उसकी इच्छा के विरूद्ध गया, और वह छोटी बोतल टूट गई, और इससे उसका मन जहरीला हो गया - उसका सोच-विचार सहीं नहीं रहा, उसका हृदय जहरीला हो गया - उसने सही बातों से प्रेम नहीं किया, उसकी इच्छा जहरीली हो गई - उसने सही चीजों को नहीं चुना। तब जब आदम की संतान हुई तो वही भ्रष्ट स्वभाव उसकी संतान में भी आ गया और इस प्रकार संपूर्ण मनुष्यजाति में यह भ्रष्ट स्वभाव और परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह भर गया।
>
> — डॉ. फ्रेंक बारकर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

टूटी हुई सहभागिता। मनुष्य के पाप में पतन के व्यक्तिगत परिणामों का वर्णन कई रूपों में किया जा सकता है। परंतु इन अध्यायों में हमारे उद्देश्यों के लिए हम चार विचारों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, जिनका आरंभ हम परमेश्वर और मनुष्यों के बीच टूटी हुई सहभागिता के साथ करेंगे।

> मनुष्य का पाप में पतन वास्तव में परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह था - उसकी नैतिक आज्ञाओं को तोड़ना था जो कि उसके चरित्र का प्रतिबिंब हैं। और यह विद्रोह हर स्तर पर दुखद विच्छेद की ओर ले गया - पहला और सबसे बड़ा, परमेश्वर से विच्छेद। हम जो उसकी सृष्टि हैं और उसके स्वरूप में रचे गए हैं, और उसकी महिमा के लिए रचे गए हैं, उस कार्य को नहीं करते। हम सदैव परमेश्वर की महिमा से रहित हो जाते हैं, और जब हम उसके विरूद्ध विद्रोह करते हैं तो वह जानबूझकर इस सृष्टि को श्रापित करता है और अपनी सृष्टि एवं परमेश्वर के बीच अलगाव को ले आता है। अतः मनुष्य के अलगाव का अनुभव, अर्थात् अपनी सुरक्षा के परम स्रोत, और महत्व, और पहचान और परमेश्वर की सृष्टि की पहचान से अलग होकर हम परमेश्वर से दूर हो जाते हैं। हम एक दूसरे से भी अलग हो जाते हैं क्योंकि मनुष्यों की रचना इस इच्छा से की गई थी कि वे अपने आनंद, अपनी पहचान, अपनी संतुष्टि को परमेश्वर में प्राप्त करें और जब हम इसे नहीं प्राप्त करते तो हम इसे संसार की वस्तुओं में खोजते हैं। और तब लोग प्रेम और स्नेह के लक्ष्य होने की अपेक्षा संसार की चीजों के लिए प्रतिस्पर्धा बन जाते हैं जिन्हें हम अपनी पहचान के लिए खोज रहे हैं और इस प्रकार हम एक दूसरे से अलग हो जाते हैं।
>
> — डॉ. के. ऐरिक थोनस

परमेश्वर ने इस संसार की रचना एक ऐसे स्थान के रूप में की थी जहाँ वह अपनी सृष्टि के साथ वास करे। परंतु आदम और हव्वा के पाप ने उन्हें परमेश्वर से दूर कर दिया; परमेश्वर के साथ उनकी संगति टूट गई। उनकी अवज्ञाकारिता ने लज्जा के भाव को उत्पन्न किया और उन्होंने परमेश्वर की उपस्थिति में अपनी संतुष्टि और भरोसे को खो दिया। इसलिए वाटिका में परमेश्वर के साथ बातचीत करने और घूमने की अपेक्षा वे उसकी उपस्थिति से छिप गए। और ये यह संगति केवल मानवीय दृष्टिकोण से ही नहीं टूटी थी, बल्कि परमेश्वर ने भी उनकी उपस्थिति को ठुकरा दिया, और उन्हें अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिया। फलस्वरूप मनुष्य की सबसे बड़ी जरूरत इस संबंध को फिर से स्थापित करना है।

इससे बढ़कर, मनुष्य की परमेश्वर के साथ टूटी हुई संगति के फलस्वरूप आदम और हव्वा की आपस में एक दूसरे के साथ संगति भी टूट गई। यह इस तथ्य में प्रमाणित है कि वे अपने नंगेपन के कारण शर्म से भर गए और उन्होंने अपने आपको अंजीर के पत्तों से ढक लिया। और हम उत्पत्ति 3:16 में मनुष्य पर आए परमेश्वर के श्राप में भी इसे देखते हैं, जहाँ हमें बताया गया है कि पाप ही विवाह में झगड़े का स्त्रोत है। इसलिए मनुष्य को भी छुटकारे की आवश्यकता है जो इन मानवीय संबंधों को फिर से स्थापित करे।

दोष। पाप में पतन का एक दूसरा व्यक्तिगत परिणाम यह हुआ कि मनुष्यजाति आदम के पाप के दोष को ढोती है। रोमियों 5:18 में इस समस्या के बारे में पौलुस के विवरण को सुनिए।

> एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दंड की आज्ञा का कारण हुआ। (रोमियों 5:18)

पौलुस ने यह सिखाया कि आदम की अवज्ञाकारिता के एक कार्य ने सारी मनुष्यजाति को दोषी ठहराया। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर पाप में पतित हरेक मनुष्य के लेखे में आदम के पाप को गिनता है, इस प्रकार हम सब उस पहले अपराध के दोषी हैं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि आदम सारी मनुष्यजाति का

वाचाई प्रधान था। उसने न केवल स्वयं का प्रतिनिधित्व किया बल्कि अपनी पत्नी और प्रत्येक उस मनुष्य का भी जो स्वाभाविक मानवीय पीढ़ी के द्वारा उनसे आएगी। फलस्वरूप हमें ऐसे छुटकारे की आवश्यकता है जो कि हमें इस दोष से और इसके द्वारा आने वाले अनंत दंड से मुक्त करे।

दुष्टता। पाप में पतन के जिस तीसरे व्यक्तिगत परिणाम का उल्लेख हम करेंगे वह है, दुष्टता। धर्मविज्ञानीय शब्द "दुष्टता" मानवीय स्वभाव के पाप द्वारा भ्रष्ट किए जाने को दर्शाता है। विभिन्न धर्मविज्ञानीय परंपराएँ विभिन्न तरीकों से दुष्टता की सीमा को समझती हैं। परंतु सभी सुसमाचारिक मसीही इस बात से सहमत हैं कि यह हमें परमेश्वर की कृपा को प्राप्त करने से रोकती है। पवित्रशास्त्र मनुष्य के स्वभाव की दुष्टता के बारे में कई स्थानों पर बात करता है, जिसमें रोमियों 3:9-18 सम्मिलित भी है।

उदाहरण के लिए रोमियों 3:10-12 के इन शब्दों को सुनें :

> जैसा लिखा है : "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। (रोमियों 3:10-12)

इन पदों में पौलुस ने पुराने नियम के विभिन्न उल्लेखों को जोड़ा है ताकि मानवीय दुष्टता के विषय में पवित्रशास्त्र की नियमित शिक्षा को दर्शा सके।

रोमियों 3 में पौलुस ने सिखाया कि हमारा व्यवहार दुष्टता से भरा है, इसलिए कोई भी धर्मी नहीं है और कोई भी भला कार्य नहीं करता है। हमारी बुद्धि भी दुष्टता से भरी है, इसलिए कोई भी नहीं समझता है। और हमारी इच्छा भी प्रभावित हुई है, इसलिए कोई भी परमेश्वर को नहीं खोजता है। वास्तव में पौलुस ने यहाँ तक भी कहा कि मनुष्य का स्वभाव हमारे पवित्र परमेश्वर के सामने निरर्थक हो गया है। हम उसकी आशीष के योग्य नहीं हैं, और अपने स्वयं के छुटकारे के लिए हम कुछ भी नहीं कर सकते। हमें किसी और की आवश्यकता है कि वह हमें छुड़ाए।

> जब दसवीं शताब्दी का आरंभ हुआ, आप जानते हैं कि उस समय इस संसार में बहुत ज्यादा आशावाद था, विशेषकर पश्चिम संसार में, इसके कई कारण थे विज्ञान का विकास, शिक्षा की विस्तृत उपलब्धता, कई आविष्कार, तकनीक, उन्नति और ऐसी काई बातें - यह दर्शनशास्त्रियों, सामाजिक शोधकर्ताओं और यहाँ तक कि उदारवादी धर्मविज्ञानियों में भी यह आशावाद था, वहाँ आशावाद का बहुत बड़ा वातावरण था कि बीसवीं शताब्दी शांति की शताब्दी होगी जहाँ किसी तरह का कोई और युद्ध नहीं होगा। बीसवीं शताब्दी ऐसी शताब्दी होगी जिसमें कोई मानवीय विवेक का महत्व होगा, और विवेकशील लोग एक दूसरे की हत्या नहीं करेंगे। अतः इस बड़ी अपेक्षा के साथ हम एक ऐसी शताब्दी में पहुँच रहे थे जिसमें शांति होगी। इस प्रकार की परिस्थिति में आप समस्या को देख रहे हैं . . . और यह समस्या मार्क्सवाद में थी, इसमें एक आशावादी मानवशास्त्र था जिसका परिणाम सामाजिक आपदाओं में सामने आया क्योंकि इसमें पाप की धर्मशिक्षा नहीं थी। तो क्या हुआ? पहला विश्व युद्ध हुआ। बोलशविक क्रान्ति हुई। बाद में नरसँहार हुआ, दूसरा विश्व युद्ध हुआ, हिटलर आया, नाजीवाद आया और इसके साथ और भी बहुत कुछ। और इस सब के फलस्वरूप, संक्षेप में कहें तो बीसवीं शताब्दी में, लगभग 1128 लाख लोग युद्ध में मर गए। मैं सिर्फ युद्ध के बारे में बात कर रहा हूँ। साधारण नागरिकों और सिपाहियों की, जहाँ तक हमें दर्ज आँकड़ों से संख्या का पता लगता है। यह पिछली चार शताब्दियों की संख्या को जोड़ भी लें तो उससे भी चार गुणा अधिक है। यह हमें क्या बताता है? कहीं कुछ तो गलत है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> न केवल सामाजिक परिस्थितियाँ, बल्कि सारे ज्ञान, विज्ञान के विकास, और सभ्यताओं की बढ़ोतरी के बावजूद भी मानवीय स्वभाव के साथ मौलिक रूप से कुछ गलत है। और हम मसीही भी ऐसे ही हैं। अब यह "पाप" शब्द मीडिया, शिक्षा जगत इत्यादि में अधिक प्रचलित नहीं है, और रैन्होल्ड नूबेर ने कहा है कि पाप की मसीही धर्मशिक्षा शेष धर्मशिक्षाओं से सबसे कम प्रचलित है, परंतु फिर भी यह एक ऐसी धर्मशिक्षा है जिसके अनुभवजन्य प्रमाण हम सबसे अधिक और हर जगह पाते हैं।
>
> — डा. पीटर कुज़मिक

दुःख,वेदना और मृत्यु। पाप में पतन का चौथा व्यक्तिगत परिणाम यह था कि सारी मनुष्यजाति ने दुःख, वेदना और मृत्यु का अनुभव करना आरंभ किया।

मनुष्यजाति के पाप में पतन से पहले, जीवन सिद्ध और भरपूर था। मनुष्यों ने किसी तरह की कोई पीड़ा या परेशानी या बीमारी या मृत्यु का अनुभव नहीं किया था। परंतु आदम और हव्वा के पाप करने के बाद परमेश्वर ने उन्हें और उनकी स्वाभाविक पीढ़ियों को श्राप दिया।

> पाप में पतन के फलस्वरूप परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों और यहाँ तक कि सारी सृष्टि को दंडित किया। इसलिए, उदाहरण के लिए काम को लें, एक ऐसी चीज जिसमें आदम और हव्वा पाप में पतन से पहले से लगे हुए थे, वह परिश्रम बन गया, और इस प्रकार मनुष्यों का कार्य के साथ प्रेम-घृणा का संबंध बन गया। स्त्री और पुरुष के बीच का संबंध भ्रष्ट और दूषित हो गया। बच्चे का जन्म - जो परमेश्वर के और अधिक स्वरूपों को उत्पन्न करने का परमेश्वर का एक और उपहार था - पीड़ा से भर गया, और कुल मिलाकर परिणाम यह हुआ कि जो भली बातें परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उनके आनंद के लिए दी थीं वे किसी न किसी भाव में भ्रष्ट और विकृत हो गईं, और उनकी भरपूरी में उनका आनंद नहीं लिया जा सका।
>
> — डॉ. साइमन विबर्ट

मनुष्यजाति को परमेश्वर द्वारा दिए गए श्रापों का वर्णन उत्पत्ति 3:16-19 में किया गया है, जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> फिर स्त्री से उसने कहा, "मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा . . ." और आदम से उसने कहा, ". . .भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा; और वह तेरे लिये काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तू . . . अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अंत में मिट्टी में मिल जाएगा।" (उत्पत्ति 3:16-19)

इन श्रापों के कारण मनुष्यजाति ने न केवल पीड़ा और दुःख का अनुभव किया, बल्कि उन्होंने उन कार्यों को पूरा करने में भी रूकावट उत्पन्न कर दी जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें सौंपा था। मनुष्यजाति संख्या में बढ़ने और पृथ्वी को भर देने के अपने कार्य, भूमि पर कार्य करने और उसको संभालने, और पृथ्वी पर अधिकार करने एवं परमेश्वर के राज्य को फ़ैलाने में कठिनाई का अनुभव करने लगी।

इससे भी बुरा यह हुआ कि मनुष्यजाति ने मृत्यु का अनुभव करना आरंभ किया। और ये श्राप मनुष्य की आने वाली पीढ़ियों पर भी आ गए। इसलिए यदि हमें मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों

को पूरा करना है, तो हमें एक मुक्तिदाता की आवश्यकता है जो हमें इन रूकावटों से बचा सके और हमें एक आशीषित, आनंदपूर्ण अस्तित्व में पुनर्स्थापित कर सके।

> मनुष्यजाति के पाप में पतन के परिणाम ये हैं कि मनुष्यजाति ने अपने मार्ग को बदल लिया। पाप परमेश्वर की आज्ञाओं की अवज्ञाकारिता है, और मनुष्य सिद्ध नहीं है। वे कभी परमेश्वर के स्तर तक नहीं पहुँच सकते हैं। इस प्रकार पाप में पतन के बाद हम परमेश्वर से अलग हो गए और पूरी मनुष्यजाति मृत्यु की वास्तविकता का सामना करती थी और करती है। बिना किसी अपवाद के कोई भी परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं है। यद्यपि मनुष्य अभी भी परमेश्वर के स्वरूप हैं, वे फिर भी भ्रष्ट हैं। मसीह में छुटकारे के बिना, कोई भी स्वाभाविक रूप से उसे नहीं खोज सकता। और हम परमेश्वर की भलाई के स्तर तक नहीं जी सकते।
>
> — डॉ. स्टीफन चान, अनुवाद

> मनुष्यों को एक मुक्तिदाता की आवश्यकता है और आवश्यकता है कि परमेश्वर उनका मुक्तिदाता बने जिसका कारण यह है : उनमें परमेश्वर के विरुद्ध पाप का स्वभाव है। परमेश्वर कोई अव्यैक्तिक शक्ति नहीं है जो इस ब्रह्मांड को अस्तित्व में ले आया है। परमेश्वर व्यक्तिगत प्राणी है - त्रिएकता की धर्मशिक्षा, परमेश्वर पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा। परमेश्वर घनिष्ठ और पूरे तरीके से व्यक्तिगत है। और इसलिए हमारे पाप भी व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के विरूद्ध होते हैं। हमारा पाप किसी और बात से बढ़कर हमारे सृष्टिकर्ता के प्रति विश्वासघात है, जैसा कि मैं समझता हूँ जो पवित्रशास्त्र हमें बताने का प्रयास कर रहा है। और क्योंकि हमारा पाप विश्वासघात के समान है, इसलिए यहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके द्वारा हम इसे सही कर सकें। विश्वासघात एक ऐसी बात है जिसके प्रति केवल वही कुछ कर सकता है जिसके साथ विश्वासघात हुआ है। और इसलिए यदि केवल परमेश्वर हमारे छुटकारे को प्रदान करे, यदि केवल परमेश्वर संबंध के टूटेपन को लेकर इसे जोड़े, तभी हम छुटकारा पा सकते हैं। परंतु जो कुछ पाप ने मनुष्य की परिस्थिति के साथ किया है उसके लिए हमें एक मुक्तिदाता की आवश्यकता भी होती है। इसने हमें फँसा लिया है। जब हम परमेश्वर से दूर होकर स्वयं की ओर मुड़ जाते हैं, तो यह हमें एक तरह के खींचने वाले गुरूत्वाकर्षण में फँसा लेता है कि परमेश्वर की कृपा के बिना न तो हमारा बचाव हो सकता है और न ही हम इस योग्य हो सकते हैं कि एक बार फिर से हमारे हृदय और जीवन परमेश्वर की ओर मुड़ सकें, इसके बिना हम अपने पापों से बच नहीं सकते। और इसलिए केवल एक मुक्तिदाता जो सबसे पहले परमेश्वर के साथ सब बातों को ठीक कर दे, वही हमें बचा सकता है, और केवल एक मुक्तिदाता जो हमारी पापपूर्ण परिस्थिति में पहुँचकर और पाप की शक्ति को हटा दे, वही हमें बचा सकता है।
>
> — डॉ. स्टीव ब्लैकमौरे

मनुष्यजाति के पाप में पतन के फलस्वरूप होने वाले व्यक्तिगत परिणामों को देखने के बाद, अब हम इसके सार्वभौमिक परिणामों को देखने के लिए तैयार हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सार्वभौमिक परिणाम

मनुष्यजाति परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों के लिए इतनी महत्वपूर्ण थी कि हमारा विद्रोह पूरे ब्रह्मांड पर श्राप ले आया। उस समय से लेकर मनुष्य समाज लगातार परमेश्वर की महिमा की अपेक्षा अपनी ही महिमा के लिए जी रहा है। हमने एक दूसरे के साथ अन्याय और पक्षपात के साथ व्यवहार किया है। और हम लगातार परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध विद्रोह करते रहे हैं, जिसके फलस्वरूप एक भले राजा और सृष्टिकर्ता के रूप में पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य अपनी सिद्ध महिमा को प्रकट करने में असफल रहा है। प्राकृतिक संसार भी इससे प्रभावित हुआ है। विनाश और मृत्यु ने इस पृथ्वी और इसमें वास करने वाले प्राणियों को भ्रष्ट और धूमिल कर दिया है। सृष्टि के प्रत्येक पहलू को उद्धार और छुटकारे की आवश्यकता है।

इस अध्याय में हम पाप में पतन के दो सार्वभौमिक परिणामों पर ध्यान देंगे, हम इस तथ्य के साथ आरंभ करेंगे कि इसने परमेश्वर के राज्य के आने में देर कर दी है।

परमेश्वर के राज्य में देर। जैसा कि हम उत्पत्ति 2:8 में पढ़ते हैं, जब परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की तो अदन की वाटिका ही केवल एक ऐसा भाग थी जो परलोक था। बाकी का संसार अविकसित और जंगली था। उत्पत्ति 1:28 के अनुसार यह मनुष्य का कार्य था कि वह पृथ्वी को अपने अधिकार में ले, अर्थात्, उसे जोते और पूरी पृथ्वी पर मानवीय समाजों को स्थापित करे ताकि पूरा संसार परमेश्वर की विशेष वाटिका के सदृश हो जाए। हमें यह सुनिश्चित करते हुए परमेश्वर के सेवक राजा होने के रूप में उस पर शासन भी करना था कि उसका महिमामय स्वर्गीय राज्य सही तरीके से उसकी पूरी पृथ्वीरुपी सृष्टि में फ़ैल जाए। जब यह कार्य पूरा हो जाता, तो परमेश्वर की योजना यह थी कि वह इस संसार में अपने विशेष पृथ्वीरुपी राज्य के रूप में वास करता।

परंतु मनुष्य के पाप में पतन ने संसार की सही जुताई और और उस पर हमारे अधिकार में देरी कर दी। और इस प्रकार इसने परमेश्वर के आने वाले राज्य में भी देरी कर दी। इसे जोतने और इस पर अधिकार करने के हमारे प्रयास पाप के द्वारा विकृत हो गए, और इस प्रकार संसार को जैसा हमने बना दिया वह परमेश्वर के वास करने के लिए करने के लिए उपयुक्त नहीं था। इसमें कोई संदेह नहीं कि मनुष्यों ने पृथ्वी को सफलतापूर्वक भर दिया है। परंतु जिन समाजों की हमने रचना की है वे उस सिद्ध संसार से बहुत दूर हैं जिसकी रचने करने की आज्ञा हमें मिली थी। युद्ध, अपराध, झगड़े, घृणा और झूठे धर्म बहुतायत से फैले हुए हैं और यहाँ तक कि कलीसिया में भी अक्सर हम ऐसे लोगों को पाते हैं जिनमें परमेश्वर के प्रति विश्वास और समर्पण की कमी होती है। और इस संसार में इस सारे पाप के फलस्वरूप परमेश्वर का राज्य अभी तक अपनी पूरी परिपूर्णता में नहीं आया है। पतरस ने 2 पतरस 3:11-12 में इस समस्या को संबोधित किया जब उसने यह लिखा :

> तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए, और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहनी चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए। (2 पतरस 3:11-12)

एक भाव में परमेश्वर अपने राज्य को पृथ्वी पर जब भी चाहे ला सकता है, क्योंकि उसके पास जब चाहे इस संसार के पाप को दूर करने की शक्ति है। परंतु परमेश्वर की योजना इस कार्य को मुक्तिदाता, यीशु मसीह के द्वारा करने की है। और इस अनुच्छेद में पतरस ने यह सिखाया कि इस संसार के भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ते हुए, हम वास्तव में सृष्टि को उसके मूल उद्देश्य की ओर ले जा सकते हैं, और उस दिन को शीघ्र ला सकते हैं जब परमेश्वर इस पृथ्वी में वास करने आएगा।

मनुष्य के पाप में पतन का दूसरा सार्वभौमिक परिणाम जिसका उल्लेख हम करेंगे वह यह है कि सारी सृष्टि अब व्यर्थता के अधीन है।

व्यर्थता के अधीन। जब पीड़ा और दु:ख मानवीय अनुभव में प्रवेश कर गए तो शेष सृष्टि की शांति और फलदायकता भी प्रभावित हुई। जमीन श्रापित हो गई जिसके फलस्वरूप यह काँटे और ऊँटकटारे उगाने लगी, और पूरी सृष्टि अव्यवस्था और भ्रष्टता से भर गई।

रोमियों 8:20-22 में पौलुस यह कहते हुए इस श्राप का वर्णन करता है कि सृष्टि निराशा के अधीन हो गई, और कि यह नाश होने के बंधन में जकड़ी गई है, एवं यह प्रसव पीड़ा होने के समान कराहती है। दूसरे शब्दों में, सृष्टि अब उन अच्छी वस्तुओं को उत्पन्न नहीं करती जिनको इसे उत्पन्न करना था, और अब यह ऐसा सिद्ध संसार बनने के योग्य भी नहीं है जो परमेश्वर इसे बनाना चाहता था।

हमारे चारों ओर के संसार पर एक सरसरी नजर डालने से पुष्टि हो जाती है कि यह कितना सच है। तूफान हमारे समुद्री किनारों को बर्बाद कर देते हैं। भूकंप शहरों और गाँवों को नाश कर देते हैं। बाढ़ कई बार पूरे-पूरे गाँवों को ही साफ कर देती है। कीड़े, पशु और रोग फसलों को नाश कर देते हैं। बीमारियाँ और चोटें लाखों के लिए दु:खों और मृत्यु का कारण बन जाती हैं। पाप में पतन के प्रभाव चारों ओर हैं। और इस संसार के ठीक होने का केवल एक ही तरीका यह है कि परमेश्वर ही सृष्टि को इसके श्राप से छुड़ाए।

> जब आदम और हव्वा ने पाप किया तो सृष्टि और मनुष्यजाति पर पड़े इसके परिणाम बहुत अधिक हुए क्योंकि इसने मनुष्यजाति की रचना के उद्देश्य को प्रभावित किया। उत्पत्ति में हमें बताया गया है कि मनुष्य को नर और नारी करके सृजा गया था कि वह इस पृथ्वी पर राज्य करे। और इसलिए परमेश्वर और सृष्टि के बीच में एक मध्यस्थ होने के नाते मनुष्य जो भी करता है उसका प्रभाव संपूर्ण सृष्टि पर पड़ता है। इसलिए यह इस तरीके से दिखाया गया है कि आदम मिट्टी से रचा गया था, इसलिए यहाँ पर यह संबंध है कि सृष्टि का भविष्य इस बात पर आधारित है कि मनुष्य किस तरह के कार्य करता है। जब आदम और हव्वा ने पाप किया तब हम ऊँटकटारों को देखते हैं और अब संसार जीवन और सृष्टि के लिए शत्रुता से भरा है। अतः इस सृष्टि का नेतृत्व परमेश्वर की व्यवस्था और परमेश्वर के साथ संबंध में करने की अपेक्षा, आप देखते हैं कि इसका बिलकुल विपरीत हो रहा है, मानवीय अधिकार, या कहें की गलत अधिकार, के अधीन सृष्टि को पथभ्रष्ट किया जा रहा है, इसे विनाश की ओर तथा परमेश्वर से दूर ले जाया जा रहा है। पौलुस रोमियों 8 में इस विषय की ओर लौटता है जब वह यह कहता है कि इस संसार में हो रहे कष्ट - जो प्राकृतिक विपदाएँ हो सकती हैं, हमारी बीमारियाँ हो सकती हैं - और ये सब बातें सृष्टि के व्यर्थता के अधीन होने से संबंधित हैं, जिसे हमारे हाथों में सौंपा गया था और हमने इसे मौलिक रूप से पाप के शासन के अधीन होकर खो दिया। परंतु सृष्टि का मानवीनीकरण करते हुए वह कहता है, "सृष्टि भी बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की बाट जोह रही है।" ऐसा इसलिए है क्योंकि जिस प्रकार सृष्टि एक भाव में मनुष्यजाति के कार्य के कारण दंड के अधीन थी, वैसे ही सृष्टि, बल्कि संपूर्ण सृष्टि, मनुष्यजाति के परमेश्वर के अधीन सही कार्य करने से बचाई भी जा सकती है, इसे हमने अभी तक नहीं देखा है, परंतु हम इसे तब देखते हैं जब दूसरा आदम आता है और मसीह उस कार्य को लेता है जिसके लिए मनुष्यजाति को बनाया गया था और वह सृष्टि को और उसके सही अधिकार को भी उसी व्यवस्था में रखता है जैसा उसे परमेश्वर के अधीन होना चाहिए। और हम इसका पूर्वानुमान यशायाह 11 में पाते हैं, जहाँ वह जानवरों के राज्य में शांति और मनुष्यों एवं जानवरों में मेल को स्थापित करता है, और इस प्रकार हम सृष्टि की महिमामय

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> व्यवस्था को देखते हैं, जैसे कि सब वस्तुएँ होनी चाहिए। और यह सब कुछ मनुष्यजाति पर आधारित है जिसके पास परमेश्वर की अधीनता में मध्यस्थ की यह भूमिका है कि वह उसके स्वरूप में होने के नाते सृष्टि के प्रति परमेश्वर की इच्छा को पूरा करे।
>
> — डॉ. जॉन मैकिनली

अब जबकि हमने मनुष्य के पाप में पतन के व्यक्तिगत और सार्वभौमिक परिणामों पर विचार कर लिया है, इसलिए हम उस आशा की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं जो पुत्र हमें पतन के बाद देता है।

मनुष्यजाति के लिए आशा

परमेश्वर ने मनुष्यजाति के छुटकारे की अपनी योजना को प्रकट करने में ज्यादा समय नहीं लगाया। वास्तव में, मनुष्यजाति के लिए आशा की पहली किरण इसी बात में नजर आई कि परमेश्वर ने उन्हें श्राप दिया। उत्पत्ति 2:17 में परमेश्वर ने मनुष्यजाति को मार डालने की चेतावनी दी थी यदि वे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाते हैं। परंतु जब आदम और हव्वा ने वर्जित फल को खाया तो वे एकदम नहीं मरे। इसकी अपेक्षा, परमेश्वर ने उनकी मृत्यु में देरी करने के द्वारा उन पर दया दिखाई। और उसने मनुष्यजाति को उस दौरान उसकी सेवा करते रहने की अनुमति देकर और अधिक दया दिखाई। सृष्टि की अपनी योजनाओं से उन्हें हटाने की अपेक्षा उसने मनुष्यजाति को अपने कार्य के केंद्र में रखना जारी रखा।

और तब परमेश्वर ने और अधिक दया से भरा कार्य किया : उसने उनसे ऐसे मुक्तिदाता को भेजने की प्रतिज्ञा की जो शैतान की योजनाओं को कुचल डालेगा और परमेश्वर के लोगों को विश्वासयोग्यता में पुनर्स्थापित करेगा। इस मुक्तिदाता के पहले उल्लेख को अक्सर "पहला सुसमाचार" कहा जाता है और यह आदम और हव्वा के पाप करने के बाद परमेश्वर द्वारा साँप को श्राप देने के कथनों में पाया जाता है।

उत्पत्ति 3:15 में इस श्राप को सुनिए :

> और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।" (उत्पत्ति 3:15)

पाप में पतन में आदम और हव्वा ने स्वयं को परमेश्वर की अपेक्षा विद्रोही साँप के साथ जोड़ा। परंतु फिर भी परमेश्वर ने अपने लोगों को नहीं त्यागा। साँप को दिए गए इस श्राप में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि अंत में स्त्री की संतान साँप को हराने के द्वारा मनुष्यजाति को बचा लेगी।

प्रकाशितवाक्य 12:9 और 20:2 सिखाते हैं कि साँप वास्तव में शैतान था। इसलिए सुसमाचारिक धर्मविज्ञानियों ने निरंतर यही समझा है कि यह पहला सुसमाचार एक साधारण जानवर के विरूद्ध बदले की प्रतिज्ञा से कहीं अधिक है। साँप के सिर को कुचलने के लिए एक मुक्तिदाता को भेजने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा मनुष्यजाति को उनके पाप के परिणामों से बचाने की प्रतिज्ञा थी कि वह उन्हें शैतान के साथ उनकी मित्रता से दूर करे और उसके राज्य के विश्वासयोग्य नागरिकों के रूप में उसके साथ उनकी संगति को पुनर्स्थापित करे।

ये आरंभिक सुसमाचारीय तस्वीरें उत्पत्ति 3:21 में जारी रहती हैं, जहाँ पर परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उनके नंगेपन और शर्म से ढकने के लिए चमड़े के कपड़े प्रदान किए। इसने न केवल मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के निरंतर प्रेम और प्रबंध को प्रदर्शित किया, बल्कि इसने एक ऐसे दिन का पूर्वानुमान भी लगाया जब परमेश्वर के लोगों को छुड़ाने के लिए और उनके पापों को ढकने के लिए एक

संपूर्ण बलिदान किया जाएगा। और जैसा कि नया नियम स्पष्ट करता है, यह बलिदान परमेश्वर का पुत्र स्वयं होगा।

अब जबकि हमने अनंतता में पुत्र, और सृष्टि में उसके कार्य पर विचार कर लिया है, इसलिए हम हमारे अपने तीसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : छुटकारे में पुत्र का कार्य।

छुटकारा

मनुष्यजाति और शेष सृष्टि के लिए आदम और हव्वा के पाप में पतन के भयानक परिणाम हुए। परंतु परमेश्वर हमारे पाप से भी बड़ा हैं। हमारे आदि माता-पिता के द्वारा मनुष्यजाति को सर्वनाश में धकेल देने के ठीक बाद ही परमेश्वर ने हमें बचाने की अपनी योजना को प्रकट किया। आरंभ से ही पिता ने पुत्र को मुक्तिदाता के रूप में नियुक्त किया जो पापियों के लिए उद्धार को लाएगा और संपूर्ण सृजे हुए हुए संसार को पुनर्स्थापित करेगा।

हमने छुटकारे की ऐतिहासिक अवधि को उस संपूर्ण युग के रूप में पहचाना है जो कि उत्पत्ति 3 में पाप में पतन के ठीक बाद आरंभ हुआ, और यह तब तक चलता रहेगा जब तक यीशु के पुनरागमन पर आकाश और पृथ्वी जाते नहीं रहते। छुटकारे की इस अवधि के दौरान पुत्र का कार्य विशेष करके पापियों की क्षमा और उनके उद्धार के द्वारा चित्रित किया गया है। पाप में पतन के ठीक बाद पुत्र ने पापियों को बचाने का कार्य आरंभ कर दिया, जब आदम और हव्वा को उस भावी छुटकारे के आधार पर परमेश्वर की दया प्राप्त हुई जो हव्वा की एक संतान को लेकर आएगी। और उसने प्रत्येक युग में पापियों को बचाना निरंतर जारी रखा है - जितनों ने अपने पापों से पश्चाताप किया है, और विश्वास के साथ उसकी ओर मुड़े हैं।

हम तीन मुख्य विचारों की खोज करते हुए छुटकारे की अवधि के दौरान पुत्र की भूमिका पर विचार करेंगे : पहला, पापियों को छुड़ाने के लिए पुत्र का उद्देश्य; दूसरा, पिता द्वारा पुत्र से की गई प्रतिज्ञा जिसने पापियों के लिए छुटकारे को सुनिश्चित किया; और तीसरा, इस छुटकारे को पूरा करने के लिए पुत्र के द्वारा किया गया कार्य। आइए पापियों के छुटकारे के लिए पुत्र के उद्देश्य से आरंभ करें।

उद्देश्य

पापियों को छुड़ाने के लिए पुत्र का उद्देश्य जटिल था, और इसका वर्णन विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है। वह अपनी इस अभिलाषा से प्रेरित हुआ कि त्रिएकता को महिमा मिले। वह इस अभिलाषा से प्रेरित हुआ कि सृष्टि अपने उद्देश्य को पूरा करे। वह न्याय और दया की अपनी अभिलाषा से प्रेरित हुआ। परंतु एक सबसे जाना-पहचाना शब्द जिसका इस्तेमाल पवित्रशास्त्र छुटकारे में पुत्र के उद्देश्य का वर्णन करने में करता है, वह है “प्रेम” - परमेश्वर के लिए प्रेम, सृष्टि के लिए प्रेम और मनुष्यों के लिए प्रेम। और यह प्रेम पुत्र तक ही सीमित नहीं था; यह त्रिएकता के तीनों व्यक्तित्वों का साझा प्रेम था।

> परमेश्वर हमें छुड़ाने के लिए प्रेरित हुआ क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। पवित्रशास्त्र इसके बारे में स्पष्ट है - 1 यूहन्ना, "परमेश्वर प्रेम है।" यूहन्ना 3:16 इस संसार में बाइबल का एक सबसे अधिक प्रचलित पद है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया।" इसलिए ऐसा क्या है जिसे उसने हमें बचाने और छुड़ाने के लिए प्रेरित किया? यह उसका प्रेम है। सृष्टि के लिए उसकी अभिलाषा और प्रारूप, विशेषकर मनुष्य की सृष्टि के लिए, कि वह उसे जाने, कि उसके साथ एक संबंध में रहे,

> उसमें भरपूरी को प्राप्त करे और इस तरह से उनके लिए एक ऐसे मंच को तैयार करे जिसमें लोग उसे जान सकें, और वह एक भले परमेश्वर के रूप में, जो कि वह है, महिमा को प्राप्त करे। इसलिए हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम वह है जो उसे हमें छुड़ाने के लिए प्रेरित करता है।
>
> — डॉ. स्टीव ब्लैकमौरे

हम तीन विचारों की ओर देखते हुए छुटकारे में पुत्र की भूमिका में प्रेरणा के रूप में परमेश्वर के प्रेम की खोज करेंगे, हम त्रिएकता के तीन व्यक्तित्वों के बीच के प्रेम के साथ आरंभ करेंगे।

त्रिएकता

इसमें संदेह नहीं कि परमेश्वर ने मनुष्यजाति को छुड़ाने का चुनाव इसलिए किया क्योंकि उसने हमसे प्रेम किया। परंतु एक बात जो हम अक्सर भूल जाते हैं, वह यह है कि मनुष्यजाति के प्रति परमेश्वर का छुटकारे का प्रेम पुत्र के लिए पिता के प्रेम का ही एक पहलू है। सुनिए किस प्रकार पौलुस हमें बचाने के पिता के निर्णय का वर्णन इफिसियों 1:4-6 में करता है :

> जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत-मेंत दिया। (इफिसियों 1:4-6)

इस छोटे से अनुच्छेद में पौलुस ने तीन बार उल्लेख किया कि परमेश्वर ने हमें उसमें, यीशु मसीह के द्वारा, और उसमें जो हमें प्रेम करता है, छुड़ाने का चुनाव किया। और उसका एक तर्क यह था कि हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम पुत्र के लिए पिता के प्रेम का परिणाम है। त्रिएकता के बीच का प्रेम हमारे छुटकारे की परम प्रेरणा है। हम ऐसी ही शिक्षाएँ रोमियों 8:39 और 1 तीमुथियुस 1:14 में भी देखते हैं।

नया नियम बार-बार इस तथ्य की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है कि पुत्र के लिए पिता का प्रेम हमारे छुटकारे के लिए महत्वपूर्ण है। पिता ने इसे यीशु के बपतिस्मा और रूपांतरण के समय सपष्ट स्पष्ट किया, जैसा कि हम मत्ती 3:17, और 17:5; और 2 पतरस 1:17 में देखते हैं। यीशु ने इसका वर्णन तब किया जब उसने यूहन्ना 3:35 और 5:20-23 में अपने छुड़ाने और न्याय करने के अपने अधिकार का वर्णन किया। और पौलुस ने कुलुस्सियों 1:13-14 में छुटकारे का वर्णन उस पुत्र के राज्य में नागरिकता के रूप में किया जिससे पिता प्रेम करता है।

और यह प्रेम दिशाहीन नहीं है। इसमें त्रिएकता के सदस्यों को सम्मान देने और उनकी आज्ञा मानने, परमेश्वर की महिमा के बढ़ने और प्रकट होने, उसके उद्देश्यों के पूरे होने, उसके राजत्व के सारी सृष्टि पर स्वीकार किए जाने और प्रशंसा किए जाने की अभिलाषा भी शामिल है। और क्योंकि मनुष्यजाति सृष्टि के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए महत्वपूर्ण है, इसलिए हमारा छुटकारा त्रिएकता के बीच प्रेम का स्वाभाविक परिणाम है।

> यह समझना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर द्वारा हमें छुड़ाने का कारण यह नहीं है कि वह हमारे बिना नहीं रह सकता, या हमें छुड़ाने का कारण यह भी नहीं है कि वह छुड़ाए हुए लोगों के बिना अकेला था। परमेश्वर आत्मनिर्भर है। उसकी कोई अपूर्ण जरूरतें नहीं हैं। उसे किसी भी बात के लिए हमारी या शेष सृष्टि की आवश्यकता नहीं है। इसलिए हम जानते हैं कि परमेश्वर किसी आवश्यकता के कारण किसी

> वस्तु की सृष्टि नहीं करता है। वह किसी भी आवश्यकता के कारण छुटकारा नहीं देता है। वह स्वयं की महिमा के लिए, अपने चरित्र को प्रदर्शित करने के लिए छुटकारा देता है, और रचना करता है और सब कुछ करता है, ताकि सारी सृष्टि पर, अर्थात् उसकी महिमा को प्रकट करने में आकाशमंडल से लेकर उसके स्वरूप में रचे गए मनुष्यों पर, जिन्हें उसकी महिमा को प्रकट करना है, वह अपने चरित्र, अपनी पवित्रता और अपने महत्व और मनोहरता को प्रकट करे। जो कुछ भी वह करता है उसका लक्ष्य वही है। परंतु वह छुड़ाता क्यों है? वह इसलिए छुड़ाता है ताकि वह छुटकारा पाई सृष्टि के द्वारा अपनी महिमा को प्रकट करे।
>
> — डॉ. के. ऐरिक थोनस

सृष्टि

दूसरा, सृष्टि के प्रति परमेश्वर के प्रेम ने भी छुटकारे में पुत्र की भूमिका को प्रेरित किया। छुटकारे में पुत्र की भूमिका सृष्टि के प्रति परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित थी, यह बात विभिन्न तरीकों से प्रमाणित है। हम इसे सृष्टिकर्ता के रूप में उसके द्वारा रची गई सब वस्तुओं के प्रति देखभाल में देखते हैं, और विशेषकर मनुष्यों के प्रति उसके प्रेम में जो उसके स्वरूप में रचे गए हैं।

शायद इसका सबसे जाना-पहचाना उदाहरण यूहन्ना 3:16-18 है, जहाँ पर हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परंतु अनंत जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दंड की आज्ञा दे, परंतु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परंतु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। **(यूहन्ना 3:16-18)**

हमें यह दर्शाना चाहिए कि यूहन्ना ने अक्सर जगत शब्द का प्रयोग विभिन्न रूपों में किया है। बहुत से स्थानों पर उसने इसका प्रयोग ब्रह्मांड, पृथ्वी, सारी मनुष्यजाति, बहुत लोगों, परमेश्वर का विरोध करने वाले लोगों, और मूल्यों एवं कार्यों की मानवीय पद्धतियों को दर्शाने में किया है। परंतु इस विषय में ऐसा लगता है कि उसका अर्थ या तो केवल सृष्टि था या सृष्टि में पाई जाने वाई सारी मनुष्यजाति था।

यूहन्ना 3:16-18 का मूल विचार यह है कि परमेश्वर के प्रेम ने उसे जगत को बचाने के लिए प्रेरित किया। वह अभी भी चाहता था कि जगत उसका महिमामय राज्य हो, और उसमें उसके सेवक और स्वरूप, अर्थात् मनुष्य भर जाएँ और उस पर शासन करें। इसलिए उसने विश्वास करने वाली बची हुई मनुष्यजाति को छुड़ाने के लिए अपने पुत्र को भेजने की योजना बनाई। विश्वासियों को बचाने के द्वारा परमेश्वर एक नई मनुष्यजाति की रचना करेगा। और तब वह स्वर्ग और पृथ्वी को अपने महिमामय राज्य के रूप में, और नए सिरे से छुटकारा पाई मनुष्यजाति के निवास के रूप में नया करेगा। यही विचार रोमियों 8:220-22; 2 पतरस 3:13; और प्रकाशितवाक्य 21:1-4 जैसे स्थानों में भी सिखाया गया है।

विश्वासी

तीसरा, विश्वासियों के प्रति परमेश्वर के प्रेम ने भी छुटकारे में पुत्र की भूमिका को प्रेरित किया। पवित्रशास्त्र के कई हिस्सों में विश्वासियों के प्रति परमेश्वर के विशेष प्रेम का वर्णन है। वह हमारे साथ

निकट संगति में रहना और हमें आशीषित करना चाहता है। और वह हमसे चाहता है कि हम बदले में उससे प्रेम करें और उसके साथ हमारे संबंध का सदा आनंद लें। वास्तव में, विश्वासियों के प्रति परमेश्वर का प्रेम इतना विशेष है कि बाइबल यहाँ तक कहती है कि हमारे जन्म लेने से भी पहले परमेश्वर हमें जानता था और हमसे प्रेम करता था। हम इसे रोमियों 8:29-39, इफिसियों 1:4-12; और 1 पतरस 1:2 में देखते हैं। और पवित्रशास्त्र यह भी स्पष्ट करता है कि विश्वासियों के प्रति परमेश्वर का प्रेम छुटकारे को पूरा करने के लिए पुत्र को भेजने के पिता के उद्देश्य का, और इसके साथ-साथ पुत्र द्वारा पिता की इच्छा को पूरा करने की अभिलाषा का महत्वपूर्ण भाग था। यह विशेषकर यूहन्ना के लेखों में स्पष्ट दिखाई देता है, जैसे कि यूहन्ना 16:27; और 1 यूहन्ना 3:16 और 4:10-19 में।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जो कुछ भी परमेश्वर करता है, वह कम से कम आंशिक रूप से अपने लोगों के लिए उसके प्रेम से प्रेरित होता है। और परमेश्वर का प्रेम सबसे सिद्ध रूप में और संपूर्णता में उसके पुत्र में प्रकट होता है। हम सब जीवन में संघर्षों से होकर जाते हैं, और कई बार संदेह भी करते है कि क्या परमेश्वर हमसे प्रेम करता भी है या नहीं। परंतु जब हम संघर्षों में होते हैं या संदेह करते हैं तब भी परमेश्वर हमसे कम प्रेम नहीं करता। वास्तविकता तो यह है कि वह हमारे सारे पापों और संघर्षों को जानता है और फिर भी हमसे प्रेम करता है। उस पर विश्वास करने से पहले भी, या पाप से बचने के हमारे प्रयास में भी परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया कि उसने हमें छुड़ाने के लिए अपने पुत्र को नियुक्त कर दिया। और यह अदा करने के लिए एक बड़ा मूल्य था - यीशु को हमारे पाप के बोझ तले दुःख उठाना और मृत्यु को सहना पड़ा। परंतु उसने ऐसा प्रेम के कारण किया। और अब अपने पुनरुत्थान में यीशु परमेश्वर के लोगों के प्रति उसके छुटकारे के प्रेम की जीवित साक्षी बन गया है।

अब जबकि हमने छुटकारे के लिए परमेश्वर के उद्देश्य की खोज कर ली है, इसलिए आइए हम उन ईश्वरीय प्रतिज्ञाओं की ओर मुड़ें जिन्होंने छुटकारे को निश्चित किया।

प्रतिज्ञाएँ

परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ अपरिवर्तनीय हैं। वे कभी बदल नहीं सकतीं, और वह उन्हें कभी नहीं तोड़ेगा। जो कुछ भी परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है, वह उसे निश्चित ही पूरा करेगा। अब छुटकारे में पुत्र की भूमिका के बारे में हमारी समझ के लिए यह महत्वपूर्ण है क्योंकि छुटकारा पिता और पुत्र के बीच की प्रतिज्ञाओं पर आधारित है।

जैसा कि हमने पहले इस अध्याय में देखा है, त्रिएकता के व्यक्तियों ने एक समझौता किया, जिसे कुछ लोगों ने "छुटकारे की वाचा" कहा है, जिसमें उन्होंने पाप में पतित मनुष्यजाति को छुड़ाने की प्रतिज्ञा की। और जो कुछ अब हम देखने जा रहे हैं, वह यह है कि छुटकारे की इस वाचा का परिणाम एक और वाचा का बनाया जाना हुआ जिसमें पाप में पतन के बाद छुटकारे को सुनिश्चित किया गया। धर्मविज्ञानी अक्सर इस बाद की वाचा को "अनुग्रह की वाचा" कहते हैं। यह औपचारिक समझौता एक ओर तो पिता और दूसरी ओर पुत्र एवं छुड़ाई गई मनुष्यजाति बीच हुआ। और यह छुटकारे की संपूर्ण अवधि में कार्यरत रहता है, अर्थात् मनुष्यजाति के पाप में पतन होने के ठीक बाद से लेकर उस अंतिम पूर्णता तक जब यीशु महिमा में वापस आएगा।

इस वाचा में पिता परमेश्वर ने पुत्र के द्वारा सृष्टि और मनुष्यजाति के लिए अपनी राज्य की योजनाओं को पूरा करने की प्रतिज्ञा की, विशेषकर पुत्र के यीशु मसीह के रूप में देहधारण करने के द्वारा। और पुत्र ने परमेश्वर के चुने हुए दाऊद के राजकीय वंश से मनुष्य के रूप में देहधारी होने की, और छुटकारे की पहली वाचा की निर्धारित सारी शर्तों को पूरा करने की प्रतिज्ञा की। वह पाप में पतित मनुष्यजाति के लिए बलिदानी मृत्यु मरेगा, और जो कोई पश्चाताप और विश्वास के साथ उसकी ओर मुड़ेगा वे पाप की उपस्थिति, भ्रष्टता और दोष से छुटकारा पाएँगे। और इन प्रतिज्ञाओं के साथ-साथ पिता और

पुत्र, पवित्र आत्मा को भेजने के लिए सहमत हुए कि वह पुत्र द्वारा बचाए हुए लोगों पर उद्धार के लाभों को लागू करे।

धर्मविज्ञानी विशिष्ट रूप से अनुग्रह की वाचा को छ: प्रशासनों या कार्यों में विभाजित करते हैं, वे इसे उन कई वाचाई क्रियाओं के अनुसार करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ अनुग्रह की वाचा की पुष्टि करने के लिए संपूर्ण इतिहास के दौरान किया। इन प्रशासनों को सामान्यतः उस मनुष्य के साथ पहचाना जाता है जिसने उस समय के दौरान परमेश्वर के लोगों की अगुवाई की जब वाचाई क्रिया की जा रही थी।

यह पाप में पतन के ठीक बाद परमेश्वर के वाचाई लोगों के प्रधान के रूप में आदम के साथ उत्पत्ति 3 में आरंभ होता है। इसे सामान्यतः वाचा का “आदम का प्रशासन”, या सरलता से "आदम की वाचा" के रूप में जाना जाता है। इस प्रशासन के अधीन मनुष्यजाति को सबसे पहले छुटकारा उत्पत्ति 3:15 में दिया गया था, जिसे हमने पहले "प्रथम सुसमाचार" के रूप में पहचाना है।

अगली नवीनीकरण की वाचा थी जो उत्पत्ति 6-9 में नूह के साथ बाँधी गई। वाचा के नूह के प्रशासन में परमेश्वर ने सृष्टि को स्थिर रूप में बनाए रखने की प्रतिज्ञा की ताकि मनुष्यजाति पुत्र के छुटकारे के कार्य की पूर्णता तक सुरक्षित रहे।

इसके बाद परमेश्वर ने अब्राहम के साथ एक वाचा बाँधी, जिसका वर्णन उत्पत्ति 15, 17 में किया गया है, और उत्पत्ति 22 में इसकी पुन: पुष्टि की गई है। इस वाचा ने अब्राहम के परिवार को विशेष अधिकार और दायित्व सौंपे, और प्रतिज्ञा की कि उसकी संतान संतानों में से एक मुक्तिदाता होगा, और वह विशेष संतान यीशु था।

सुनिए गलातियो 3:16 में पौलुस ने क्या लिखा है :

> **अतः प्रतिज्ञाएँ अब्राहम को और उसके वंश को दी गईं। वह यह नहीं कहता, “वंशों को,” जैसे बहुतों के विषय में कहा; पर जैसे एक के विषय में कि “तेरे वंश को” और वह मसीह है। (गलातियों 3:16)**

पौलुस ने देखा कि वाचा के अब्राहम के प्रशासन में प्रतिज्ञाएँ न केवल अब्राहम के साथ की गई थीं, बल्कि मसीह के साथ भी। परमेश्वर का पुत्र प्रतिज्ञात मुक्तिदाता था जो परमेश्वर की वाचा की सारी आशीषों को उसके विश्वासयोग्य लोगों पर लेकर आएगा - विशेषकर पाप से छुटकारा देने की आशीष।

अगली वाचा इस्राएल के साथ मूसा के दिनों में आई, जिसका वर्णन निर्गमन 19-24, और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में किया गया है। वाचा के मूसा के प्रशासन में या "मूसा की वाचा" में परमेश्वर ने बलिदान-संबंधी प्रणाली की स्थापना की जिसने उस बलिदान को चित्रित किया जो पुत्र अंत में करेगा जब वह यीशु नासरी के रूप में देहधारण करेगा। मूसा द्वारा स्थापित ये बलिदान उन प्रतिज्ञाओं की स्पष्ट पुष्टियाँ थीं जो पिता और पुत्र ने सृष्टि से पहले की थीं। और इन बलिदानों के द्वारा परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों ने उस छुटकारे के पूर्व-स्वाद का अनुभव किया जो पुत्र अंत में लेकर आएगा।

इस समय के दौरान इस्राएल की स्थापना एक राजसी याजकीय समाज और एक पवित्र राष्ट्र के रूप में हो चुकी थी। और परमेश्वर की वाचा के प्रति अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा उन्हें पृथ्वी के राज्य का निर्माण करना था जिस पर पुत्र को अंत में शासन करना था।

वाचा का पाँचवाँ प्रशासन, और पुराने नियम के समय का अंतिम प्रशासन, वह था जो कि दाऊद के अधीन था, जिसे अक्सर "दाऊद की वाचा" कहा जाता है। अनुग्रह की वाचा के दाऊद के प्रशासन का उल्लेख 2 शमूएल 7 और भजन संहिता 89, 132 जैसे स्थानों में पाया जाता है। इस समय परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि मुक्तिदाता दाऊद के वंश से आएगा, कि वह पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को लेकर आएगा, और कि उसके धर्मी शासन के द्वारा वह उस प्रत्येक को छुटकारा प्रदान करेगा जो उस पर विश्वास करेगा।

अंततः छठा प्रशासन यीशु के दिनों में आरंभ हुआ और उसके पुनरागमन तक जारी रहेगा। बाइबल सामान्यत: इस प्रशासन को "नई वाचा" कहती है, जैसा कि हम लूका 22:2220, और इब्रानियों 9:15 और 12:24 जैसे स्थानों में देखते हैं। अनुग्रह की वाचा के इस प्रशासन के तहत छुटकारे का सारा कार्य वास्तव में पूरा हो रहा था और हो रहा है। यीशु ने पाप के लिए बलिदान के रूप में मरने की अपनी प्रतिज्ञात भूमिका को निभाया। पिता ने उसके बलिदान को स्वीकार किया। और पवित्र आत्मा उन सब पर छुटकारे को लागू कर रहा है जो यीशु पर अपने मुक्तिदाता के रूप में विश्वास करते हैं।

> उद्धार का आधार हमेशा यीशु के द्वारा ही रहा है। छुटकारे के इतिहास में समय के आधार पर यीशु की सेवकाई की वास्तविक अवधि के संबंध जहाँ आप हैं, वह निर्धारित करता है कि क्या ध्यान या केंद्र जांचने वाला है या नहीं, जैसा कि यह हमारे लिए नई वाचा में है कि हम उन प्रतिज्ञाओं की ओर मुड़ कर देखें जो यीशु की सेवकाई के द्वारा पूरी हो चुकी हैं और स्थापित की जा चुकी हैं। या फिर उनके लिए है जो पुराने नियम में आगे की ओर ज्यादा ध्यान के साथ नहीं देख रहे है जैसा कि हमारी समझ में अब है, परंतु परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के अनुसार वे यीशु के व्यक्तित्व में पूरी हो चुकी हैं। इसलिए, हाँ, हमारे उद्धार का आधार हमेशा यीशु ही है।
>
> — डॉ. रोब लिस्टर

> यहाँ कुछ लोग हैं जो सोचते हैं कि क्या मसीह के आगमन से पूर्व कोई अलग-अलग तरीके थे जिनमें पुराने नियम के लोगों का उद्धार हुआ था। और ऐसे उत्तर भी हैं जो दिए गए हैं, जैसे कि कुछ ने प्रशासन करने के द्वारा तो कुछ व्यवस्था के द्वारा उद्धार पाया था, और कुछ ने अन्य माध्यमों से उद्धार पाया था, शासन के द्वारा और इस्राएल के लोगों के भाग होने के द्वारा। कुछ ने शायद ख़तने के द्वारा उद्धार पाया। परंतु बाइबल की संपूर्ण शिक्षा यह है कि यह सारी चीजें केवल उस एक घटना की तैयारी मात्र थीं जिससे कि वास्तव में हमारा उद्धार होगा। बलिदान-संबंधी प्रणाली चाहे जितनी भी विवरणात्मक थी, और चाहे जितनी भी महत्वपूर्ण थी, भविष्यवक्ता स्वयं कहते हैं कि यदि उनके हृदय परमेश्वर की ओर लगे हुए नहीं हैं तो वे बलिदान चढ़ाना बंद करें। तब इब्रानियों की पुस्तक इसे पूरी तरह से स्पष्ट करती है कि बैलों और बकरियों का लहू पाप को दूर नहीं कर सकता। केवल एक ही बलिदान है जो ऐसा कर सकता है। और वह मसीह के व्यक्तित्व की अद्वितीयता के कारण था। वह एक ही व्यक्तित्व में परमेश्वर और मनुष्य दोनों था। इस व्यक्ति का एक होना ही वह एकमात्र व्यक्तित्व था जो हमें परमेश्वर के प्रति छुटकारा दे सका।
>
> — डॉ. थॉमस नैटल्स

अब जबकि हमने छुटकारे से संबंधित ईश्वरीय उद्देश्यों और प्रतिज्ञाओं को देख लिया है, इसलिए हम पुत्र के उस कार्य को जाँचने के लिए तैयार हैं जो उसने छुटकारे को पूरा करने के लिए किया, विशेषकर यीशु नासरी के रूप में उसके देहधारण के द्वारा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

कार्य

हम यीशु के छुटकारे के कार्य के चार पहलुओं पर ध्यान देंगे : उसके द्वारा परमेश्वर के राज्य का उदघाटन; पिता के प्रति उसकी आज्ञाकारिता; उसका पुनरुत्थान; और उसका स्वर्गारोहण। आइए पहले उसके द्वारा परमेश्वर के राज्य के उदघाटन को देखें।

परमेश्वर के राज्य का उदघाटन

पूरे पुराने नियम में परमेश्वर के लोग उस दिन की बड़ी लालसा से प्रतीक्षा कर रहे थे जब परमेश्वर अपने शत्रुओं का पूरी तरह से विनाश करके और अपने लोगों को आशीष के अनंत जीवनों में स्थापित करके अपने राज्य को नाटकीय रूप में पृथ्वी पर लाएगा। यह वह दिन होगा जब मनुष्यजाति को दिया मूल आदेश अंततः पूरा हो जाएगा। परमेश्वर अपनी सृष्टि को पूरी तरह से पुनर्स्थापित करेगा, और उसकी इच्छा पृथ्वी पर ठीक वैसी ही सिद्धता के साथ पूरी होगी जैसे स्वर्ग में पहले से ही पूरी होती है।

जब पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने इस्राएल की इस पुनर्स्थापना, मनुष्यजाति और सृष्टि के बारे में बात की तो उन्होंने अक्सर उसे प्रभु का दिन या अंत के दिनों के रूप में कहा। उन्होंने मसीहा या ख्रिस्त को ऐसे मुख्य चरित्र के रूप में पहचाना जो अंत के दिनों में परमेश्वर के राज्य की अगुवाई करेगा। और नए नियम के अनुसार यीशु, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र, वही प्रतीक्षारत मसीहा है जो पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को स्थापित करने के लिए आया।

यीशु ने सिखाया कि वह अपने दिनों में परमेश्वर के राज्य को इस पृथ्वी पर ले आया था। उदाहरण के लिए, मत्ती 12:28 में उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है", अर्थात् यह पहले से ही वहाँ था। और लूका 16:16 में उसने फिर से सिखाया कि लोग पहले से ही परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर रहे थे, जब उसने यह कहा, "हर कोई उसमें प्रबलता से प्रवेश करता है।"

दुखद रूप से, यीशु के दिनों में बहुत से लोगों ने इस विचार को अस्वीकार कर दिया कि परमेश्वर का राज्य आ चुका है, क्योंकि उनकी अपेक्षा थी कि यह एक प्रभावशाली सांसारिक वास्तविकता होगी जिसे सब लोगों के द्वारा पहचाना जाएगा, अर्थात् संपूर्ण सांसारिक व्यवस्था का स्पष्ट और भौतिक तख्ता पलट। परंतु यीशु ने सिखाया कि राज्य कुछ अलग तरह से आया था।

सुनिए लूका 17:20-21 में उसने क्या कहा :

> **परमेश्वर का राज्य दृश्य रूप में नहीं आता। और लोग यह न कहेंगे, 'देखो, यहाँ है, या वहाँ है।' क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।" (लूका 17:20-21)**

निश्चित रूप से यीशु परमेश्वर के राज्य को उसकी सारी पूर्णता में लेकर नहीं आया है। उसने वह कार्य केवल आरंभ किया है। इसलिए हम अभी भी उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह उसे पूरा करे जो उसने आरंभ किया है, अर्थात् परमेश्वर के राज्य को पूर्ण करे या पूर्णता में लाए। परंतु यह एक धीमी प्रक्रिया है। जैसा कि यीशु ने मत्ती 13, मरकुस 4 और लूका 13 में अपने दृष्टान्तों में सिखाया कि परमेश्वर का राज्य एक बीज के समान है जो समय के साथ-साथ बढ़ता है, या ख़मीर के समान है जो समय के साथ-साथ रोटी को फुला देता है। इन दृष्टान्तों की सांमजस्यता में हम कह सकते हैं कि राज्य को बो दिया गया है, परंतु कटनी का दिन तब तक नहीं आएगा जब तक भविष्य में यीशु का पुनरागमन नहीं हो जाता।

नया नियम सिखाता है कि यीशु, अर्थात् परमेश्वर के देहधारी पुत्र ने इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का आरंभ किया। और पूरी निश्चितता के साथ सिखाता है कि जब वह महिमा में वापस आएगा तो यह बुरा युग पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा, और नया स्वर्ग और नई पृथ्वी परमेश्वर के लोगों के लिए संपूर्ण पुनर्स्थापना को लाएँगे। और इससे हमें एक बड़ी आशा और भरोसा मिलना चाहिए। पाप में पतित इस

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

संसार में कई बार ऐसा लगता है कि बुराई जीत रही है, और कि हम व्यर्थ दुःख उठा रहे हैं। परंतु परमेश्वर अपने न्याय को सदा टालता नहीं रहेगा। एक दिन आ रहा है जब वह अपने शत्रुओं के विरुद्ध अंतिम न्याय को भेजेगा। वह संसार से पाप, दुःख और मृत्यु को पूरी तरह से दूर कर देगा। और वह अपने विश्वासयोग्य लोगों को अपने राज्य में अनंत मीरास प्रदान करेगा। यीशु ने स्वयं को अनेक आश्चर्यकर्मों और शिक्षाओं के द्वारा प्रमाणित किया है, और यहाँ तक कि उसने राज्य की हमारी आशीषों के बयाने के रूप में अपना पवित्र आत्मा भी हमें दिया है। इसलिए हम आश्वस्त हो सकते हैं कि वह अपने राज्य को पूर्ण करने और हमें हमारी संपूर्ण मीरास देने के लिए वापस आएगा।

अब जबकि हमने देख लिया है कि कैसे यीशु ने परमेश्वर के राज्य का आरंभ या उदघाटन किया, इसलिए आइए अब हम पिता के प्रति उसकी आज्ञाकारिता के कार्य को देखें।

आज्ञाकारिता

हमारे इस अध्याय में पहले हमने मनुष्यजाति के पाप में पतन के व्यक्तिगत परिणामों पर विचार किया था। हमने देखा था कि आदम के पहले पाप का दोष पूरी मनुष्यजाति पर स्थानान्तरित कर दिया गया, क्योंकि आदम ने हमारी वाचा के प्रधान होने के रूप में मनुष्यजाति का प्रतिनिधित्व किया। हमने परमेश्वर के साथ हमारी संगति के टूटने का और उस नैतिक भ्रष्टता का दुःख भी उठाया जो हमें अपने लिए उद्धार प्राप्त करने से रोकती है।

एक महत्वपूर्ण भाव में हमारे मुक्तिदाता के रूप में यीशु की भूमिका में वहाँ सफल होना भी शामिल था जहाँ आदम असफल हो गया था। यीशु ने पिता के प्रति एक सिद्ध आज्ञाकारी जीवन जीया जिसका अंत क्रूस पर उसकी मृत्यु के साथ हुआ। और अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा उसने उन आशीषों को जीत लिया जिन्हें आदम ने खो दिया था। और अब वह उन आशीषों को अपने सब विश्वासयोग्य लोगों के साथ साझा करता है। पौलुस ने रोमियों 5:12-19 में यीशु और आदम के बीच की समानताओं के बारे में व्यापक रूप से बात की है। और 1 कुरिन्थियों 15:45 में पौलुस ने उसे "अंतिम आदम" भी कहा है।

धर्मविज्ञानी अक्सर उसकी आज्ञाकारिता के दो पहलुओं के बारे में बात करते हैं जो यीशु ने अपने पूरे जीवन में दर्शाई। एक ओर उसकी निष्क्रिय आज्ञाकारिता अपमान और दुखों से भरे जीवन के प्रति समर्पण था, जिसका अंत क्रूसीकरण में हुआ। क्रूस पर उसकी मृत्यु ने परमेश्वर की धर्मी माँग को पूरा किया कि पाप का दंड मृत्यु हो। अपनी निष्क्रिय आज्ञाकारिता में यीशु ने हमारा स्थान ले लिया। उसने हमारे दोष को अपने ऊपर ले लिया, अर्थात् अपने लेखे में गिन लिया। और एक बार जब वह परमेश्वर की दृष्टि में दोषी गिना गया, तो वह हमारे स्थान पर मर गया। इस एक कार्य ने हमारे सारे पापों का मूल्य चुका दिया ताकि परमेश्वर का न्याय और क्रोध हमें फिर कभी न डराए। इसने हमारे पापों की क्षमा को प्राप्त किया और हमें व्यवस्था के दंड से मुक्त किया।

जैसा कि पौलुस ने रोमियों 5:18-19 में लिखा :

> **इसलिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दंड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। (रोमियों 5:18-19)**

यहाँ पौलुस ने स्पष्ट तौर पर आदम और यीशु की तुलना की। और उसका कहना यह था कि क्योंकि यीशु हमारा उसी तरह से प्रतिनिधित्व करता है जैसा आदम ने एक बार हमारा प्रतिनिधित्व किया था, इसलिए क्रूस पर यीशु का बलिदान हमें परमेश्वर के उचित दंड से मुक्त करता है, और हमें उसके सामने धर्मी प्रकट करता है।

यीशु द्वारा दर्शाई गई दूसरी प्रकार की आज्ञाकारिता सक्रिय आज्ञाकारिता थी। यह पिता द्वारा दी गई सब आज्ञाओं के प्रति उसका आज्ञाकारी जीवन था। अपने देहधारण में यीशु ने सिद्धता से परमेश्वर की व्यवस्था का पालन किया। उसने कभी पाप नहीं किया, और उसने सदा वही किया जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने दी थी। और जिस प्रकार हमारे दोष क्रूस पर यीशु पर पर लाद दिए गए थे, उसी प्रकार बदले में उसकी धर्मी आज्ञाकारिता को हम पर लागू कर दिया गया। धर्मविज्ञानी इसे अक्सर "न्यायालयिक धार्मिकता" कहते हैं, जिसका अर्थ है कि यद्यपि हम अभी तक हमारे भीतर पाप की उपस्थिति से पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं हुए हैं, फिर भी हमें धर्मी घोषित कर दिया गया है। परमेश्वर हमें ऐसे देखता है मानो हम उसके देहधारी पुत्र यीशु हों - मानो हमने सिद्ध जीवन जीया हो, और स्वयं उसके सारे भले कार्यों को किया हो। फलस्वरूप, हमारी परमेश्वर के साथ संगति पुनर्स्थापित हो गई है। यद्यपि नैतिक भ्रष्टता हमें अभी भी अपने द्वारा उद्धार को प्राप्त करने से रोकती है, फिर भी परमेश्वर हमें यीशु के कार्यों के आधार पर उद्धार की आशीषों को प्रदान करता है।

> जैसा कि बाइबल बताती है, “क्रोध की संतान” के रूप में हमें हमारी पापमय, पतित दशा से छुटकारा पाने के लिए परमेश्वर की आवश्यकता है कि वह हमारी समस्या का समाधान करे। हम असहाय हैं, आशारहित हैं, और पाप की हमारी अपनी समस्या का समाधान करने में असमर्थ हैं। परंतु परमेश्वर अपने अनुग्रह में हमारी समस्या का समाधान करता है। और वह हमारा प्रतिनिधित्व करने के लिए अपने पुत्र को भेजने के द्वारा ऐसा करता है। पुत्र-परमेश्वर मनुष्य बन जाता है और आज्ञाकारिता का एक सिद्ध जीवन जीता है, क्रूस पर एक सिद्ध मृत्यु मरता है, और फिर हमारे लिए मृत्यु को पराजित करते हुए कब्र में से बाहर निकल आता है। और हमारे लिए छुटकारा पाने का केवल यही एक मार्ग है कि हम नई सृष्टि के भागी हो जाएँ, और पुनरुत्थानित छुटकारा-प्राप्त जीवन के पहले फल बन जाएँ जिनका प्रतिनिधित्व यीशु करता है। और उसमें भागी होने का केवल एक तरीका है, वह है मसीह, एक नए मनुष्य, नए आदम पर विश्वास करने के द्वारा जो इस नए प्रकार की मनुष्यजाति का प्रतिनिधित्व करता है जो हमारी पतित अवस्था से छुटकारा पा चुकी है। अतः यह परमेश्वर-मनुष्य, अर्थात् मसीह में विश्वास करना है जो अपने छुटकारे के कार्य में हमारा प्रतिनिधित्व करता है जिससे हम छुटकारा प्राप्त करते हैं।
>
> — डॉ. के. ऐरिक थोनस

अब जबकि हमने यीशु के कार्य को परमेश्वर के राज्य और आज्ञाकारिता के आधार पर देख लिया है, तो आइए हम मृतकों में से उसके पुनरुत्थान की ओर मुड़ें।

पुनरुत्थान

यीशु का शारीरिक पुनरूत्थान छुटकारे के उसके कार्य के लिए महत्वपूर्ण था। मृतकों में से जी उठने के द्वारा यीशु ने मृत्यु पर विजय को प्राप्त किया, और उन सबके अनंत भौतिक जीवन को सुरक्षित कर दिया जो उस पर विश्वास करते हैं।

सुनिए किस प्रकार पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:20-21 में यीशु के पुनरुत्थान का वर्णन किया :

> परंतु सचमुच मसीह मुर्दो में से जी उठा है, और जो सो गए हैं उनमें वह पहला फल हुआ। क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। **(1 कुरिन्थियों 15:20-21)**

आदम का पाप मृत्यु को लेकर आया। परंतु जब यीशु मृतकों में से जी उठा तो उसने सुनिश्चित किया कि जो उस पर विश्वास करते हैं, वे सब भी जी उठेंगे। और जब उसका पुनरागमन होगा तो हम सदैव ऐसे महिमामय शरीरों में रहेंगे जैसा हमारे मुक्तिदाता के पास पहले से ही है।

यीशु के पुनरुत्थान की इस समझ को अपने मन में रखते हुए, आइए हम छुटकारे के उसके कार्य के चौथे पहलू की ओर मुड़ें : उसका स्वर्गारोहण।

स्वर्गारोहण

अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु चालीस दिनों के दौरान अपने चेलों के सामने प्रकट होता रहा, और उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाता रहा। और इस समय के अंत में वह देहसहित स्वर्ग पर उठा लिया गया। इस घटना का वर्णन लूका 24:50, 51 और प्रेरितों के काम 1:3-11 में किया गया है।

छुटकारे के यीशु के कार्य में स्वर्गारोहण कम से कम दो कारणों से महत्वपूर्ण था। एक ओर, वह स्वर्ग पर इसलिए चढ़ा कि राजा के रूप में सिंहासन पर विराजमान हो। वह अब पिता के सेवक राजा के रूप में सारी सृष्टि पर, और विशेषकर अपने लोगों, अर्थात् कलीसिया पर शासन करता है। इन विवरणों का उल्लेख 1 कुरिन्थियों 15:23-25; इब्रानियों 12:2 और 1 पतरस 3:22 जैसे स्थानों पर किया गया है।

दूसरी ओर, स्वर्गारोहण इसलिए भी महत्वपूर्ण था क्योंकि इसने यीशु को स्वर्गीय मंदिर में अपने बलिदान को पूरा करने, और पिता की उपस्थिति में अपने लोगों के लिए मध्यस्थता और बिचवई करने की अनुमति दी। मध्यस्थ की अपनी भूमिका में यीशु अपने पिता को उस बलिदान का स्मरण दिलाता है जो उसने क्रूस पर किया था, ताकि पिता अपने विश्वासयोग्य लोगों को निरंतर क्षमा करता और आशीष देता रहे। हम इसके बारे में इब्रानियों 7:25-26, और 9:11-28 जैसे स्थानों पर पढ़ते हैं।

अब, एक भाव में छुटकारे की उस वाचा के कारण पुत्र सदैव हमारा मध्यस्थ रहा है जो उसने सृष्टि से पहले पिता के साथ बाँधी थी। परंतु स्वर्ग में उसके आरोहण के बाद पुत्र एक विशेष रूप से हमारा मध्यस्थ बन गया।

सुनिए किस प्रकार पौलुस ने 1 तीमुथियुस 2:5-6 में हमारे मध्यस्थ के रूप में यीशु की भूमिका का वर्णन किया है :

> **परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है। (1 तीमुथियुस 2:5-6)**

यीशु मसीह, परमेश्वर का देहधारी पुत्र पापियों के लिए एक बलिदान के रूप में मर गया। और अब वह पिता के सिंहासन के समक्ष सेवा करता है, वह यह सुनिश्चित करता है कि जिस छुड़ौती को उसने क्रूस पर अदा किया था वह निरंतर हमारे जीवनों पर लागू होती रहे। जैसा कि हम इब्रानियों 7:25 में पढ़ते हैं :

> **जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है। (इब्रानियों 7:25)**

> किसी और के द्वारा उद्धार नहीं, यह केवल यीशु मसीह के नाम में है। सबसे पहले, कोई भी धार्मिक अगुवा यीशु मसीह की सिद्ध प्रतिष्ठा की समानता में नहीं पहुँचा, और उनमें से कोई भी अनंत नहीं है। इससे बढ़कर, यह और भी अधिक महत्वपूर्ण है कि केवल यीशु मसीह ही परमेश्वर और लोगों को बीच एक योग्य मध्यस्थ है। इस संसार के धर्म और दर्शनशास्त्र हमें जीवन के अच्छे सिद्धांत दे सकते हैं। परंतु केवल यीशु मसीह ही है जो पिता की ओर से आता है और वहीं वापस जाता है। केवल वही परमेश्वर के साथ हमारा मेल मिलाप करवाने, और हमारे बदले हमारे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> पाप को अपने ऊपर ले लेने के योग्य है। इस प्रकार, वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ है, न केवल नैतिक या दार्शनिक अर्थ में, बल्कि अपने व्यक्तित्व में भी। बाइबल की शब्दावली में कहें तो यीशु ही एकमात्र परमेश्वर-मनुष्य है, मनुष्यों का मुक्तिदाता है और कोई भी व्यक्तिगत प्रयासों और नैतिक व्यवहारों के द्वारा इस सिद्ध स्तर तक नहीं पहुँच सकता।
>
> — डॉ. स्टीफन चान, अनुवाद

हम सब जीवन में परीक्षाओं और संघर्षों में से हो कर जाते हैं। हम सब कई बार सोचने लगते हैं कि क्या परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता भी है या नहीं। परंतु हमारे संदेहों के बावजूद बाइबल हमें आश्वस्त करती है कि यीशु ने उस मूल्य को अदा करने के लिए मृत्यु सही जो हमें पाप से छुड़ाता है। हमारे अनंत जीवन को सुनिश्चित करने के लिए वह मृत्यु में से जी उठा। और वह स्वर्ग पर इसलिए चढ़ गया ताकि वह हमारे लाभ के लिए और हमारे लिए निरंतर मध्यस्थता करते रहने के लिए अपने राज्य में शासन करे। इसका यह अर्थ बिलकुल नहीं है कि जीवन हमेशा आसान होगा - ऐसा नहीं है। परंतु इसका यह अर्थ अवश्य है कि हमारा मुक्तिदाता सदैव हमारी सुनता है, हमारे साथ सहानुभूति रखता है, और हमसे प्रेम करता है, और कि हम उस उद्धार में सुरक्षित हैं जो वह लेकर आता है।

अब जबकि हमने यीशु के अनंतता में होने, और सृष्टि में उसके कार्य और छुटकारे पर विचार कर लिया है, इसलिए हम अपने अंतिम मुख्य विषय को संबोधित करने के लिए तैयार हैं : भविष्य में होने वाली आकाश और पृथ्वी की पूर्णता में हमारे मुक्तिदाता का कार्य।

पूर्णता

आकाश और पृथ्वी की पूर्णता में ऐसी घटनाएँ शामिल हैं जो यीशु के भावी पुनरागमन के ठीक आसपास की होंगी, और साथ ही हमारे उद्धार का अंतिम चरण जो उस समय से जारी रहते हुए अनंत भविष्य तक चलेगा। इसमें परमेश्वर के सारे शत्रुओं का नाश होना, उसके लोगों के लिए पूर्ण आशीष, और सृष्टि का संपूर्ण नवीनीकरण भी शामिल है, जहाँ परमेश्वर के छुटकारा पाए लोग सदा के लिए वास करेंगे। संक्षेप में, उस समय संसार अंततः परमेश्वर का महिमामय पृथ्वीरुपी राज्य बन जाएगा।

हम तीन चरणों में इस बात की जाँच करेंगे कि बाइबल आकाश और पृथ्वी की पूर्णता के बारे में क्या कहती है। पहला, हम यीशु के पुनरागमन का वर्णन करेंगे। दूसरा, हम उन समानान्तर घटनाओं को देखेंगे जो आकाश और पृथ्वी को पूर्ण करेंगी। और तीसरा, हम पूर्णता के अनंतकालीन परिणामों का वर्णन करेंगे। आइए यीशु के पुनरागमन से आरंभ करें।

यीशु का पुनरागमन

यीशु का इस पृथ्वी पर पहली बार प्रकट होना बहुत ही नम्रतापूर्ण था। वह संसार के लगभग बहुत से भागों में अजनबी ही था। और यहाँ तक कि जिन स्थानों में वह रहा, वहाँ भी सांसारिक इतिहासकारों ने उसके बारे में बहुत कम बात की है। परंतु उसका दूसरा आगमन बहुत अलग होगा। जैसा यीशु ने मत्ती 24:30 में कहा है :

> वे मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। (मत्ती 24:30)

और जैसा कि 1 थिस्सलुनीकियों 4:16 में पौलुस ने कहा है :

> क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)

पवित्रशास्त्र के ये और अन्य अनुच्छेद यीशु के पुनरागमन के तरीके के बारे में कम से कम चार विवरण देते हैं। पहला, यह एक व्यक्तिगत और भौतिक आगमन होगा। हमारा प्रभु यीशु मसीह इसी संसार में वापस आएगा जिसमें हम अब रहते हैं। और प्रेरितों के काम 1:11 इस विवरण को जोड़ता है कि वह वैसे ही वापस आएगा जैसे उसका स्वर्गारोहण हुआ था, शायद इसका अर्थ यह है कि वह बादलों पर से नीचे उतरेगा।

दूसरा, उसका पुनरागमन सार्वजनिक और दृष्टिगोचर होगा। सब लोग उसे देखेंगे, और उसकी घोषणा परमेश्वर की विश्वव्यापी तुरही से और प्रधान दूत के शब्द के साथ होगी।

तीसरा, यीशु का दूसरा आगमन विजयी होगा। वह शक्तिशाली विजेता के रूप में वापस आएगा। और मत्ती 16:27, 24:31 और 25:31 जैसे अनुच्छेदों के अनुसार, उसके साथ स्वर्गदूतों की एक सेना होगी।

और चौथा, पवित्रशास्त्र यह भी प्रकट करता है कि यीशु का पुनरागमन अचानक होगा; यह तब नहीं होगा जब हम इसकी अपेक्षा करते हैं। वास्तव में, मत्ती 24:36 के अनुसार, दूसरे आगमन की तिथि की जानकारी केवल पिता को है। इसलिए विश्वासियों को ऐसे लोगों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए जो मसीह होने का दावा करते हैं, या फिर उसके पुनरागमन के समय को जानने का दावा करते हैं।

यीशु के पुनरागमन की इस समझ को मन में रखते हुए, आइए उन घटनाओं को देखें जिन्हें वह पूर्णता के समय आरंभ करेगा।

घटनाएँ

कम से कम तीन महत्वपूर्ण घटनाएँ उस समय घटित होंगी जब यीशु का पुनरागमन होगा : सामान्य पुनरूत्थान, अंतिम न्याय और सृष्टि का नवीनीकरण। हम सामान्य पुनरुत्थान के साथ आंरभ करके इनमें से प्रत्येक घटना को देखेंगे।

सामान्य पुनरुत्थान

मसीह के पुनरागमन के समय, प्रत्येक जो मर चुका है वह जी उठेगा। दुष्टों और धर्मियों दोनों को नया शरीर दिया जाएगा जो हमेशा बना रहेगा। यह बिल्कुल स्पष्ट रूप से यूहन्ना 5:28-29 में सिखाया गया है, जहाँ यीशु ने ये शब्द कहे :

> वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं वे (पुत्र का) शब्द सुनकर निकल आएँगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे। (यूहन्ना 5:28-29)

हम ऐसे ही विचारों को प्रकाशितवाक्य 20:13 जैसे स्थानों में पाते हैं, जहाँ हमें बताया गया है कि पुनरुत्थान में वे लोग भी सम्मिलित होंगे जिनके शरीरों शरीर खो चुके है। कोई भी नहीं छूटेगा; न्याय का सामना करने के लिए सारी मनुष्यजाति जी उठेगी।

विश्वासियों के पुनरुत्थानित शरीरों के विषय में पवित्रशास्त्र सिखाता है कि वे पाप की उपस्थिति और भ्रष्टता से स्वतंत्र होंगे। पाप अब और हमारे शरीरों में वास नहीं करेगा और हमारा स्वास्थ्य सदैव अच्छा रहेगा। जैसा पौलुस ने फिलिप्पियों 3:20-21 में सिखाया :

> **प्रभु यीशु मसीह . . . हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा। (फिलिप्पियों 3:20-21)**

हमारी अंतिम अवस्था में हमारे शरीर महिमामय होंगे, ठीक उस महिमामय देह के समान जो अब यीशु मसीह के पास है, अर्थात् वह जो उसने मृतकों में से जी उठने के समय प्राप्त की थी।

अविश्वासियों का शरीर भी हमेशा बना रहेगा, परंतु वे पाप से छुटकारा नहीं पाएँगे। इसकी अपेक्षा, उनका शरीर पाप के विरूद्ध परमेश्वर के श्राप के प्रभावों से निरंतर रोगी रहेगा। और वास्तव में, यह श्राप बढ़ जाएगा जब उनका न्याय होगा। पवित्रशास्त्र अविश्वासियों के देहसहित जी उठने के बारे में यूहन्ना 5:28-29, और प्रेरितों के काम 24:15 जैसे स्थानों में बताता है; और वह उनके देहसहित दंड का उल्लेख मत्ती 5:29-30, और 10:28 में करता है।

दूसरी मुख्य घटना जो यीशु के पुनरागमन पर घटित होगी, वह है अंतिम न्याय।

अंतिम न्याय

सामान्य पुनरूत्थान के ठीक बाद यीशु अंतिम न्याय के समय अपने शत्रुओं को नाश करने और अपने विश्वासयोग्य लोगों को आशीष देने के द्वारा एक राजा के रूप में अपने अधिकार और सामर्थ्य का प्रयोग करेगा। प्रत्येक मनुष्य इस अंतिम न्याय में शामिल किया जाएगा; कोई भी इससे नहीं बचेगा। यह सभोपदेशक 12:14; मत्ती 12:36-37; 2 कुरिन्थियों 5:10; और प्रकाशितवाक्य 20:12-13 जैसे अनुच्छेदों से स्पष्ट है। और यही अनुच्छेद दर्शाते हैं कि जैसे प्रत्येक मनुष्य का न्याय होगा, वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पहलू को मुकदमें में प्रमाण के रूप में माना जाएगा। प्रत्येक विचार, शब्द और कार्य का मूल्याँकन होगा।

क्योंकि मनुष्यजाति पतित और पापपूर्ण है, इसलिए प्रत्येक मनुष्य जो अपने भले कार्यों के आधार पर परमेश्वर के सामने खड़ा होगा वह इस न्याय में दोषी ठहराया जाएगा, और नरक में अनंत दंड का भागी होगा। परंतु शुभ संदेश यह है कि जिन्हें मसीह में विश्वास से अनुग्रह के द्वारा क्षमा किया गया है, उन्हें छोड़ दिया जाएगा और अनंत मीरास का प्रतिफल दिया जाएगा।

यूहन्ना 3:18 इस विषय को इस प्रकार लिखता है :

> **जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परंतु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। (यूहन्ना 3:18)**

यही विचार यूहन्ना 5:24; 1 कुरिन्थियों 11:32; और 2 थिस्सलुनीकियों 2:12 जैसे स्थानों में दोहराया गया है।

> **मैं सोचता हूँ कि छुटकारे के उसके कार्य में एक न्यायी के रूप में पुत्र की भूमिका इस बात में संतुलन बनाए रखने का तरीका है कि हमें अपनी परिभाषा के द्वारा परमेश्वर के प्रेम पर जरुरत से अधिक बल देना है। परमेश्वर का स्वभाव मूल रूप**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> से पवित्र है, और पवित्रता के दो मुख्य पहलू हैं : उसके धर्मी मापदंड और उसका दयाशील प्रेम। अतः क्रूस पर प्रेम के कारण स्वयं को बलिदान करने के लिए पुत्र के आने का पहलू नि:संदेह छुटकारे के हमारे अर्थ का मुख्य भाव है। परंतु उस छुटकारे में हमें इस बात का सामना भी करना होगा कि वह पवित्र और धर्मी है, और उसके मापदंड कभी नहीं बदले हैं। अदन की वाटिका से लेकर आज तक वे एक जैसे हैं। हम सब ने पाप किया है। और इसलिए क्रूस और यीशु मसीह के छुटकारे के कार्य की हमारी अवधारणा में न्यायी का न्याय मुख्य भाग होना चाहिए। इसके बिना, मैं सोचता हूँ कि हम पाप की अवधारणा को धूमिल कर देते हैं। हम मूलभूत पश्चाताप और पाप से बचने के लिए उद्धारकर्ता की आवश्यकता को नहीं समझते हैं। फिर तो यह केवल एक प्रेमपूर्ण ईश्वर बन जाता है जो आता है और मुझे मेरी समस्याओं से छुड़ा देता है। प्रभु यीशु का वह न्याय और उसकी धार्मिकता क्रूस पर किए गए उसके बलिदानी कार्य और उद्धार पाने के बाद भी एक विश्वासी के जीवन में किए जाने वाले उसके निरंतर कार्य की पूरी अवधारणा के लिए आधारभूत है। हम मानवीय इतिहास के अंत में भी एक न्यायी के रूप में यीशु से मिलने वाले हैं। अतः हमारे सारे जीवन प्रेम की इस पवित्रता और पवित्र धार्मिकता के अधीन आते हैं कि अपनी सारी दया में उसका न्यायी होना हमारा प्रतिनिधित्व करना है।
>
> — डॉ. बिल ऊरी

अंततः, तीसरी मुख्य घटना जो यीशु के पुनरागमन के समय घटित होगी, वह है सृष्टि का नवीनीकरण।

सृष्टि का नवीनीकरण

जिस प्रकार यीशु मनुष्यजाति का न्याय करेगा और इसमें से अविश्वासियों को निकाल बाहर करेगा, उसी प्रकार वह सृष्टि को भी शुद्ध और नया करेगा। 2 पतरस 3:10-13 इस रीति से सृष्टि के नवीनीकरण का वर्णन करता है :

> आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएँगे . . . आकाश आग से पिघल जाएँगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएँगे। पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी। (2 पतरस 3:10-13)

मनुष्यजाति के छुटकारे का शेष सृष्टि पर भी प्रभाव पड़ेगा क्योंकि, जैसा रोमियों 8:22 कहता है, "हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं और लेपालक होने की, अर्थात् देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।" सृष्टि आदम के पाप के फलस्वरूप निराशा की अवस्था में थी। निराशा स्वयं को अव्यवस्था और गड़बड़ी और मृत्यु में प्रकट करती है। यह बात जिसका सृष्टि अभी अनुभव कर रही है, पौलुस कहता है कि यह एक स्त्री के द्वारा बच्चा जनने के समय होने वाली प्रसव पीड़ा के समान है,

> जिसका यह अर्थ है कि अभी कुछ आना बाकी है - इसमें से कुछ उत्पन्न होगा - और सारी सृष्टि छुटकारे और पुनर्स्थापना को प्राप्त करेगी। और यह उस वास्तविकता की परिपूर्णता की प्रतीक्षा कर रही है, जैसा कि हम स्वयं, जिनके पास आत्मा के पहले फल हैं, पुत्रों के रूप में गोद लिए जाने की और हमारे शरीरों के छुटकारे की प्रतीक्षा कर रहे हैं। और जिस प्रकार विश्वासी अपनी महिमामय अवस्था में पुनर्स्थापित किया जाएगा और मृत्यु और पाप और सड़ाव से मुक्त हो जाएगा, उसी प्रकार सृष्टि भी उसी समय अपने बंधन से मुक्त हो जाएगी, जब एक नई पृथ्वी और नया आकाश बिना किसी मृत्यु और सड़न और अव्यवस्था के प्रकट होंगे जिन्हें हम अब हमारे अपने चारों ओर देखते हैं।
>
> — रेव्ह. जेम्स मैप्लस

प्रकाशितवाक्य 22:3 के अनुसार आकाश और पृथ्वी का यह नवीनीकरण पाप की उपस्थिति और उसके श्राप को पूरी तरह से हटा देगा। मनुष्यजाति के पाप में पतन के सारे प्रभाव हटा दिए जाएँगे, ताकि परमेश्वर के लोग बिना किसी पाप, दु:ख, रोग या मृत्यु के जीवन जी सकें। प्रकाशितवाक्य 21:4 हमें यह भी बताता है कि परमेश्वर हमारी आँखों से हमारे सारे आँसुओं को मिटा डालेगा। सारी सृष्टि परमेश्वर की वास्तविक योजना में पुनर्स्थापित कर दी जाएगी, और उसके लोग उसके अनंत राज्य में कभी समाप्त न होने वाले जीवन की आशीष को प्राप्त करेंगे। और प्रकाशितवाक्य 21, 22 में उल्लिखित नया यरूशलेम उस राज्य की राजधानी होगा।

प्रकाशितवाक्य 22:2 उस नए यरूशलेम के एक भाग का वर्णन इस प्रकार करता है :

> नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था . . . और उस वृक्ष के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे। (प्रकाशितवाक्य 22:2)

उत्पत्ति 2-3 दर्शाता है कि जीवन का वृक्ष अदन की वाटिका में लगाया गया था। विशेषकर, उत्पत्ति 3:22-24 दर्शाता है कि जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका से निकाल दिया, तो उसने ऐसा आँशिक तौर पर इसलिए किया कि वह उन्हें इसके फल को खाने से रोक सके। परंतु जब मसीह वापस आएगा, तो अंतिम न्याय के बाद जीवन के वृक्ष का फल फिर से मनुष्यजाति के लिए उपलब्ध होगा, जो परमेश्वर के महिमामय राजत्व में हमारे लिए अनंत शांति और स्वास्थ्य को लेकर आएगा।

> मनुष्यजाति के परमेश्वर के स्वरूप में होने और सृष्टि पर अधीन-शासक होने के बीच एक संबंध है। आदम और हव्वा को परमेश्वर के अधिकार की अधीनता में सृष्टि पर शासक नियुक्त किया गया था, और जिस क्षेत्र पर वे शासन करते हैं उसमें और उनके बीच में एक संबंध है। जब आदम और हव्वा पाप में गिरे तो इसका प्रभाव न केवल आदम पर पड़ा, बल्कि सृष्टि पर भी। इसी तरह, जैसा कि रोमियों 8 कहता है, आरंभ में आदम और हव्वा के पाप के साथ जब सृष्टि भी सड़ने के लिए बंधन में छोड़ दी गई थी, तो यह भी पाप के उन सभी प्रभावों से स्वतंत्र कर दी जाएगी जब मनुष्यजाति के अंतिम छुटकारे के समय मनुष्यजाति भी अपनी अंतिम स्वतंत्रता का अनुभव करेगी। अतः परमेश्वर के स्वरूप को रखने वाले अधीन-शासक और जिस क्षेत्र पर वे शासन करते हैं, उनमें एक संबंध है। वह प्रभाव आपस में बंधा है, पाप के रूप में, मानवीय पाप का अनुभव, और उसी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> अनुभव में सृष्टि का पतन भी। इसके बाद अंत में मनुष्यों का पाप से इस प्रकार छुटकारा प्राप्त करना कि सृष्टि भी अपने बंधन से छुटकारा पाए।
>
> — डॉ. राबर्ट लिस्टर

अब जबकि हमने मसीह के पुनरागमन के तरीके और उसकी घटनाओं को देख लिया है, इसलिए आइए इसके परिणामों को खोजें।

परिणाम

इस अध्याय के आरंभ में हमने यह कहते हुए सृष्टि के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को सारगर्भित किया था कि परमेश्वर ने ब्रह्मांड की रचना मसीह में अपने राज्य के द्वारा अपनी महिमा को प्रकट करने और बढ़ाने के लिए की थी। और यीशु के पुनरागमन के परिणाम इस उद्देश्य की अंतिम पूर्णता होंगे। यीशु पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को उसकी पूर्णता में लाने के लिए वापस आ रहा है, ऐसे विश्वासयोग्य लोगों के साथ जिनसे परमेश्वर प्रेम करता है, और जो बदले में परमेश्वर से प्रेम करते, उसकी सेवा करते और उसकी आराधना करते हैं।

> मनुष्यजाति के छुटकारे में परमेश्वर का परम लक्ष्य अपने लिए लोगों को पुनर्स्थापित करना है। वह पुर्नस्थापना उस संगति से भी अधिक पूर्ण और बड़ी होगी जो आदम और हव्वा के पास अदन की वाटिका में थी। मनुष्यजाति के पाप में पतन के बाद परमेश्वर उन्हें प्रोटो-यूएंगेलियोन अर्थात् सुसमाचार की प्रथम प्रतिज्ञा देता है , और एक ऐसे मुक्तिदाता के बारे में बोलता है जो स्त्री के वंश से आएगा और जो साँप के सिर को कुचल डालेगा। और शेष पवित्रशास्त्र इस पुर्नस्थापना की क्रिया के आगे बढ़ने की प्रक्रिया है। इस्राएल का राष्ट्र इसी पुर्नस्थापना का एक हिस्सा और इसी पुर्नस्थापना का एक चित्र है। विश्वव्यापी होने के नाते तब कलीसिया इस पुनर्स्थापना का और भी बड़ा चित्र है। और तब अंत में, मसीह के दूसरे आगमन में आपके पास नए आकाश और नई पृथ्वी की पुर्नस्थापना है जिसमें परमेश्वर प्रत्यक्ष रूप से मनुष्यजाति के साथ सहभागिता रखता है, उन सबके साथ जो विश्वास के द्वारा यीशु के पास आए हैं, और वे इस सिद्ध अवस्था का आनंद लेते हैं जिसमें शैतान कोई आक्रमण नहीं कर सकता, जिसमें पाप की कोई उपस्थिति नहीं होगी, और वे सिद्धता के साथ अनंत समय तक परमेश्वर की महिमा करेंगे।
>
> — डॉ. जैफ लौमैन

यीशु के द्वारा आकाश और पृथ्वी की पूर्णता के परिणामों को कई रूपों में सारगर्भित किया जा सकता है, परंतु इस अध्याय में हम इन्हें दो भागों में विभाजित करेंगे। पहला, हम परमेश्वर की महिमा पर ध्यान देंगे जो पूर्णता फलस्वरूप आती है। और दूसरा, हम छुटकारे के उस आनंद पर ध्यान केंद्रित करेंगे जिसका मनुष्य अनुभव करते हैं। आइए पहले हम परमेश्वर की महिमा की ओर देखें।

परमेश्वर की महिमा

> मैं सोचता हूँ कि त्रिएक परमेश्वर को हमारे छुटकारे का कार्य करने के कारण अनंतता में महिमा प्राप्त होगी। परमेश्वर ने यह अपनी महिमा के लिए किया है, न

> केवल अपने न्याय और धार्मिकता और अपरिवर्तनीयता और अपनी व्यवस्था की सिद्ध पवित्रता को प्रदर्शित करने के लिए, परंतु यह प्रकट करने के लिए कि वह बुद्धिमान है और स्वयं के बारे में इन सभी गुणों को बनाए रख सकता है, और फिर भी दयालु और क्षमाशील हो सकता है और पापियों को धर्मी ठहराता है। भविष्यद्वक्ता ने ऐसा पूछा, "तेरे समान क्षमा करने वाला परमेश्वर कौन है, और किसके पास ऐसा अनुग्रह है?" अतः यह परमेश्वर की महिमा के लिए है। यह पापियों के उद्धार के लिए है, परंतु इसका अंतिम परिणाम और इसका इच्छित परिणाम यह है कि संपूर्ण अनंतता में परमेश्वर की महिमा सदैव बढ़ते हुए रूप में प्रकट हो।
>
> — डॉ. थॉमस नैटल्स

जब मसीह का पुनरागमन होगा, तो राजा के रूप में परमेश्वर के राज्य पर उसका शासन शिखर, अर्थात् सम्मानित स्तर पर पहुँच जाएगा। और परमेश्वर की महिमा को लाने का लक्ष्य तब पूरा होगा जब सारी मनुष्यजाति यीशु के शासन को स्वीकार करेगी और उसके अधिकार के सामने घुटने टेकेगी। जैसे पौलुस ने फिलिप्पियों 2:9-11 में लिखा है :

> परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ट है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है। (फिलिप्पियों 2:9-11)

परमेश्वर की परोपकारिता उसके लिए महिमा को लाएगी, क्योंकि अपने प्रेम और अपनी दयालुता में वह पश्चाताप करने वाले पापियों को क्षमा करेगा और हमारी सोच से परे हमें आशीषित करेगा। और इसके प्रत्युत्तर में हम उसकी स्तुति करेंगे, और उसकी भलाई की घोषणा करेंगे। जैसा पौलुस ने इफिसियों 2:6-7 में कहा है :

> परमेश्वर ने हमें मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए। (इफिसियों 2:6-7)

जब यीशु वापस आएगा, तो हमारी विश्वासयोग्यता का प्रतिफल दिया जाएगा, और परमेश्वर के सब विश्वासयोग्य लोग नए आकाश और नई पृथ्वी के वारिस होंगे, जहाँ प्रकाशितवाक्य 21:1-5 शिक्षा देता है कि हम परमेश्वर की उपस्थिति का आनंद इस तरह से लेंगे जो अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के साथ उसकी उपस्थिति से भी उत्तम होगी।

> स्पष्ट है कि पाप में गिरने से पहले मनुष्यों ने परमेश्वर के साथ एक स्वतंत्र, पूर्ण व्यवस्थित सहभागिता का आनंद लिया। परंतु एक ऐसा भाव है जिसमें मनुष्यजाति के पतन के बाद परमेश्वर ने एक छुटकारे का प्रबंध किया जो परमेश्वर के साथ एक ऐसे संबंध की आशा करता है जो और अधिक संपूर्ण है और उससे भी अधिक उत्तम है जिसका आनंद पतन से पहले लिया गया था। अतः आदम को परमेश्वर का मित्र कहा गया, परंतु हरेक विश्वासी का सौभाग्य यह है कि वह पुत्र कहलाए और बहुतों ने इस बात की ओर संकेत किया है कि उस शब्द में संबंध की एक और अधिक गहरी घनिष्ठता निहित है, और एक ऐसा भाव भी है जिसमें

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> हम फिर से उस वाटिका में नहीं जाएँगे। हम वास्तव में नए यरूशलेम में जाएँगे और ऐसा प्रतीत होता है कि बाइबल के धर्मविज्ञान में इस स्थान के प्रति एक उन्नत होता हुआ विचार पाया जाता है कि वह स्थान शायद नया यरूशलेम हो, या नया आकाश और नई पृथ्वी हो, परंतु वह वापसी का स्थान नहीं जहाँ हम पहले थे।
>
> — डॉ. साइमन विबर्ट

> इस प्रश्न के विषय में कि क्या हम पाप में पतन होने से पहले की अपेक्षा अच्छी अवस्था में होंगे या नहीं, मैं सोचता हूँ कि सबसे पहले यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि मनुष्य का पाप में पतन, अर्थात् परमेश्वर को त्यागना, एक त्रासदी है। यह एक दुखद बात है; यह स्वर्ग के महान राजा के विरूद्ध एक बड़ा विद्रोह है। और इसलिए हम पाप में पतन की त्रासदी को किसी भी तरह से कम नहीं करना चाहते। परंतु जब हम देखते हैं कि परमेश्वर की सर्वोच्च योजना कार्य करती है तो हम इसके अंत में देखते हैं कि हमें उसकी अपेक्षा एक बहुत उत्तम परिणाम मिला है, यदि हम उस वाटिका में ही रहते जैसे कि आदम और हव्वा निर्दोष होने की अवस्था में थे। क्योंकि हमें अंत में छुटकारा मिला है, यह केवल निर्दोष होने की अवस्था ही नहीं है, बल्कि हमें त्रिएकता की सहभागिता में लाया गया है, कि मसीह में हमारे छुटकारे के द्वारा और मसीह में हमारे छुटकारे के द्वारा हम उस त्रिएक्य संबंध में आमंत्रित किए गए हैं जो पिता, पुत्र और आत्मा का अनंतता से रहा है, और हम दिव्य स्वभाव के सहभागी, अर्थात् मसीह के साथ सहउत्तराधिकारी बन जाते हैं। और इसलिए निश्चित रूप से, जब हम मसीह में अपनी अवस्था का मूल्याँकन करते हैं, तो यह उससे बहुत उत्तम है जो हमारे पास तब होता यदि हम आदम और हव्वा के समान वाटिका में ही होते। अतः यहाँ एक अद्‌भुत, सर्वोच्च आशीष है जो कि बाहर निकल कर आती है, और यह पाप में पतन के कारण होता है। ऐसा नहीं है कि यह दु:खद नहीं है, परंतु निश्चित रूप से, यह परमेश्वर की सर्वोच्च भलाई और सामर्थ्य के कारण है जो उससे बड़ी आशीष को उत्पन्न करता है जो अन्यथा हमारे पास होती।
>
> — डॉ. के. ऐरिक थोनस

नि:संदेह यीशु के पुनरागमन का एक दूसरा पहलू भी है जिससे परमेश्वर को महिमा मिलेगी, और वह सारी मनुष्यजाति के लिए एक बड़ी चेतावनी के रूप में कार्य करेगा। अपने लोगों को आशीष देने के साथ-साथ, प्रभु उन लोगों को श्राप देगा जिन्होंने मुक्तिदाता और राजा के रूप में उसका इनकार किया है। उनका दंड उसकी महिमा को लाएगा क्योंकि यह उसकी पवित्रता के सम्मान को बनाए रखेगा, उसके न्याय को प्रदर्शित करेगा और उसके लोगों को पाप की उपस्थिति के शोषण और उसकी पीड़ा से स्वतंत्र करेगा। और प्रकाशितवाक्य 19:1-2 जैसे अनुच्छेदों के अनुसार, परमेश्वर के धर्मी लोग दुष्टों के न्याय पर आनंद करेंगे। परंतु तब तक विश्वासी सामान्यतः इन विचारों से आनंदित नहीं होते। इसकी अपेक्षा, हम स्वयं को क्षमा और मसीह में उद्धार के सुसमाचार की घोषणा के प्रति समर्पित करते हैं, ताकि अधिक से अधिक लोग इस भयानक अंत से बच सकें।

अब जबकि हमने पूर्णता के फलस्वरूप होने वाली परमेश्वर की महिमा की जाँच कर ली है, इसलिए आइए यह देखें कि बाइबल उस छुटकारे के आनंद के बारे में क्या सिखाती है जिसका अनुभव विश्वासी करेंगे।

छुटकारे का आनंद

बाइबल कम से कम आनंद के तीन नियमित स्रोतों का उल्लेख करती है जिन्हें विश्वासी अपने छुटकारे में प्राप्त करेंगे। और शायद इन सब में सबसे श्रेष्ठ यह है कि परमेश्वर के साथ हमारी संपूर्ण सहभागिता होगी।

अदन की वाटिका में अपने पाप के बाद, आदम और हव्वा एक दूसरे से और परमेश्वर से छिप गए। और जब परमेश्वर ने उन्हें श्राप दिया, तो उन्हें उसकी विशेष उपस्थिति से निकाल दिया गया। परंतु पूर्णता के समय यीशु मानवीय स्वभाव को पुनर्स्थापित कर देगा, जिससे परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में भौतिक रूप से हमें प्रवेश मिल जाएगा, ताकि हम उसकी महिमा को अपनी आँखों से देखें। इसे स्पष्ट रूप में यूहन्ना 17:24; 1 यूहन्ना 3:2; और प्रकाशितवाक्य 21:3 जैसे स्थानों पर सिखाया गया है।

सुनिए किस प्रकार चौथी शताब्दी के हिप्पो के बिशप अगस्टीन ने इस आशीष को अपनी कृति सिटी ऑफ़ गॉड की पुस्तक 22 के अध्याय 30 में कैसे सारगर्भित किया है :

> परमेश्वर स्वयं, जो सदगुण का रचियता है, उनका प्रतिफल होगा: क्योंकि उससे श्रेष्ठ और उत्तम कोई भी नहीं है, उसने स्वयं की प्रतिज्ञा की है। भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहे गए वचन का और क्या अर्थ हो सकता है, "मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँगा, और तुम मेरे लोग होंगे," इसका अर्थ यही है, "मैं ही उनकी तृप्ति हूँगा, मैं वह सब कुछ हूँगा जिसकी मनुष्य सम्मान के साथ अभिलाषा करता है, अर्थात् जीवन, और स्वास्थ्य, और पोषण और बहुतायत, और महिमा और सम्मान और शांति और सारी भली वस्तुएँ।" प्रेरित ने जो कहा उसकी यह भी सही व्याख्या है, "कि परमेश्वर सब में सब कुछ हो।" वही हमारी इच्छाओं की पूर्णता होगा जो बिना सीमा के दिखाई देगा और बिना किसी चापलूसी से उससे प्रेम किया जाएगा, बिना थके उसकी स्तुति होगी। प्रेम का यह बहाव, अर्थात् यह कार्य निश्चित रूप से अनंत जीवन के समान सबके लिए सामान्य होगा।

छुटकारे का दूसरा आनंद जिसका विश्वासी अनुभव करेंगे, वह है, एक दूसरे के साथ सिद्ध सहभागिता।

परमेश्वर के साथ हमारी संगति का नाश करने के अतिरिक्त, आदम के पाप ने मानवीय संबंधों को भी नष्ट कर दिया था। परंतु प्रकाशितवाक्य 22:2 दावा करता है कि जब हम पूरी तरह से छुटकारा प्राप्त कर लेंगे तो राष्ट्र चंगाई प्राप्त करेंगे। लड़ाइयाँ बंद हो जाएँगी, अन्याय का अंत हो जाएगा, और हमारे संबंध पूरी तरह से पुनर्स्थापित हो जाएँगे। समस्त संसार शांतिपूर्ण, मित्रतापूर्ण और ऐसे लोगों का पारिवारिक समुदाय बन जाएगा जो एक दूसरे से प्रेम करते हों और एक दूसरे की सेवा करते हों।

अंततः हम छुटकारे के जिस तीसरे आनंद का उल्लेख करेंगे वह यह है कि हम मसीह के साथ नए आकाश और नई पृथ्वी पर राज्य करेंगे।

पौलुस ने 2 तीमुथियुस 2:12 में इसका उल्लेख किया, जहाँ उसने यह लिखा :

> यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे। (2 तीमुथियुस 2:12)

मसीह के साथ हमारे राज्य की शिक्षा भी प्रकाशितवाक्य 2:26-27, 3:21 और 22:5 में दी गई है।

आदम और हव्वा परमेश्वर के स्वरूप में रचे जाकर अदन की वाटिका में रखे गए थे कि वे परमेश्वर के प्रभुत्व में इस सृष्टि पर शासन करें। परंतु आदम के पाप के श्राप और भ्रष्टता ने मनुष्यजाति को यह कार्य इस प्रकार करने से रोक दिया कि जिससे परमेश्वर का परम उद्देश्य पूरा हो। परंतु यीशु ने अपने बलिदान और आज्ञाकारिता के कारण वह करना आरंभ कर दिया है जो आदम नहीं कर सका। वह अब हमारे वाचाई प्रधान के रूप में खड़ा है, और वह सारी सृष्टि पर राज्य करता है। और संसार की पूर्णता में छुटकारा पाई हुई मनुष्यजाति अंततः सृष्टि पर इस प्रकार से शासन करेगी जिससे परमेश्वर को महिमा मिले और सारी सृष्टि सिद्धता से लाभान्वित हो।

> मसीही लोग आशा की आत्मा में हमारी भविष्य की आशा, अर्थात् संपूर्ण छुटकारे के प्रति प्रत्युत्तर दे सकते हैं। आशा एक सकारात्मक भविष्य के लिए एक विश्वास से भरा पूर्वानुमान है। और आशा का एक महत्वपूर्ण और व्यावहारिक स्वभाव यह है कि यह हमें प्रफुल्लित बनाता है, हमें दृढ़ बनाता है, हमें प्रसन्नचित्त बनाता है, और यह वर्तमान में हमें इस विश्वास में एक तरह का पुर्वानुमानित आनंद प्रदान करता है कि जिसकी प्रतिज्ञा की गई है, वह एक वास्तविकता बन जाएगा। यह हमें उस परिणाम की निश्चित अनिवार्यता के भाव के द्वारा आगे की ओर उत्साहित करता है जिसके लिए हम अब परिश्रम करते है, जो हमारे सीमित दृष्टिकोण में स्वाभाविक रूप से शायद थोड़ा अस्थिर या अनिश्चित होगा।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कोर्गी

उपसंहार

यीशु मुक्तिदाता है, के इस अध्याय में हमने यीशु मसीह, अर्थात् परमेश्वर के पुत्र के व्यक्तित्व और कार्य पर चार भिन्न समयकालों के दौरान विचार किया है, वे हैं ब्रह्मांड की सृष्टि से पूर्व की अनंतता; सृष्टि का आरंभिक समय, छुटकारे का लंबा युग, और पूर्णता का भावी युग।

यीशु मसीह निःसंदेह अब तक का सबसे अधिक रूचिकर, जटिल और महत्वपूर्ण विशेष व्यक्ति है। और वह आज भी जीवित है। वह सारी सृष्टि का राजा है, जो स्वर्ग के अपने सिंहासन से शासन कर रहा है। हम उसकी संपूर्ण जटिलता में उसको कभी पूरी तरह से समझने और उसकी सराहना करने की आशा नहीं कर सकते। परंतु आशा करते हैं कि इस अध्याय में दिया गया अवलोकन हमें इस प्रकार से यीशु के विषय में सोचने के लिए तैयार कर सकता है जो उसको सम्मान दे और उसके लोगों को लाभान्वित करे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।